लेखक का कथन

अगस्त 2006 में जाटों को लुटेरा लिखे जाने का प्रकरण उछलने पर इस पुस्तिका का पहला संस्करण प्रकाशित हुआ था। उसके बाद पाठकों की भारी मांग पर दूसरा, तीसरा और चौथा संस्करण छपा, लेकिन इस पुस्तिका की मांग बढ़ती चली गई और पाठकों के बार-बार नये संस्करण की मांग पर यह पांचवां संस्करण आपके हाथों में है। जिसमें काफी कुछ नया है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि सभी पाठकों ने इसे पसन्द किया हो। कुछ ऐसे भी थे जिन्हें पढ़कर इसे नापसंद किया, लेकिन मैं सभी पाठकों का समान रूप से आभारी हूं, जिन्होंने इस पुस्तक को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की परन्तु मेरी उन पाठकों से बड़ी शिकायत है जिन्होंने पुस्तक को पूरा नहीं पढ़ा और चुप बैठ गए।

कुछ भी लिखने से पहले मैं वर्तमान में जाट समाज के लिए नई आपत्ति गौत्र विवाद के बारे में संक्षेप में बताना चाहता हूं कि यह आपत्ति सन् 1955 से ही है। जबसे 'हिन्दू विवाह कानून' बना। लेकिन इसके परिणाम अभी आने शुरू हुए हैं। 'हिन्दू विवाह कानून' समगोत्र विवाह को वैध मानता है जबकि जाट समाज समगोत्र विवाह को पाप और व्यभिचार मानता है। इसलिए 'हिन्दू विवाह कानून' में संशोधन ही जाट समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए एकमात्र समाधान है। लेकिन याद रहे यह समस्या केवल जाट समाज की नहीं है, उत्तर भारत में रहने वाली कई स्थानीय जातियों की है। इसलिए जाट कौम इन सभी जातियों को साथ लेकर चले और इसकी जिम्मेदारी जाट कौम अकेली न ले।

इसके बाद मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैं न तो इतिहासकार हूं और ना ही कोई साहित्यकार। मैं अभी तक जो भी अध्ययन कर पाया हूं उसी के परिणामस्वरूप यह पुस्तक लिख रहा हूं जिसमें सुनी-सुनाई बातों की अपेक्षा प्रमाणिक तथ्य हैं। मेरा इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य किसी को खुश या नाराज करना तनिक भी नहीं और न ही किसी जाति विशेष की बुराई से है। मैंने वही तथ्य लिखे हैं जिनका ठोस धरातल है और मेरी जाट कौम को इन्हें जानने का पूरा-पूरा अधिकार है। इस पुस्तक में जाट इतिहास की झलक मात्र है ताकि मेरी कौम और हमारी आने वाली संतानें जान सकें कि हमारे पूर्वज कितने महान् थे तथा इस महानता को बनाए रखने के लिए हमें आज के आधुनिक युग के परिपेक्ष्य में नये सिरे से सोचने की आवश्यकता है। ताकि हमारी कौम हमारी मूल संस्कृति और इतिहास से भविष्य में भी जुड़ी रहे। इस पुस्तक का पंजाबी अनुवाद चौ० भलेराम नैन गांव भुल्लन जिला संगरूर (पंजाब) करवा चुके हैं और शीघ्र ही छपने वाली है। यह पुस्तक जाट इतिहास नहीं है क्योंकि मेरा मानना है कि जाट कौम का इतिहास संसार की किसी भी जाति

के इतिहास से विशाल और महान् है, जिसे संगृहित करना मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के लिए कठिन ही नहीं असंभव प्रतीत होता है। हालांकि जाट इतिहास को लिखने के दर्जनों सुंदर प्रयास हो चुके हैं और वे सभी इतिहासकार धन्यवाद और स्तुति के पात्र हैं, जिनके कारण इस पुस्तक का लिखना संभव हो पाया। लेकिन मेरा मानना है कि वे सभी प्रयास अधूरे हैं। इसलिए मैंने निजी तौर पर डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, डॉ० सुखीराम रावत तथा प्रो० महीपाल आर्य आदि विद्वानों से आग्रह किया है कि वे जाटों के सम्पूर्ण इतिहास की रचना करें तथा इस महायज्ञ को करने का बीड़ा उठाएं। साथ-साथ मैंने यह भी अनुरोध किया है कि एक जाट लेखक संगठन का गठन किया जाए। वैसे जाटों ने कभी लेखकों का सम्मान नहीं किया, इसलिए आज जाट कौम अपने सम्पूर्ण इतिहास से महरूम है। मैंने अनुभव किया है कि जाट भाइयों को इतिहास पढ़ने व लिखने में बहुत ही कम रूचि है। सच कहा जाए तो धैर्य की बहुत बड़ी कमी है, इसी कारण अधिकतर जाट ऐसे विषयों को पूरा नहीं पढ़ पाते और तुरन्त ही कोई नतीजा निकालने के लिए बीच-बीच में पढ़कर छोड़ देते हैं। या फिर कहते हैं कि इसमें कोई विशेष नहीं। कहने का अर्थ है कि वे अपने रूढ़िवादी मानसिकता के अनुसार ही सोचते और विचारते हैं। बहुत ही दुःख की बात है कि जाट शहीद महाराजा नाहर सिंह तथा महान क्रान्तिकारी महाराजा महेन्द्र प्रताप तक के बारे में नहीं जानते।

किसी भी कौम का इतिहास केवल भूतकाल कहानियां ही नहीं, वह उस कौम की भविष्य की दिशा निर्धारित करते हुए उस कौम के बिखराव और पतन को रोकता है और आज हमारी कौम में यही सब कुछ हो रहा है। आज हमारी कौम में आपसी जलन और विरोध ने विशेष स्थान ले लिया है। जब कोई भी जाट किसी भी क्षेत्र में उठने का प्रयास करता है तो उसकी टांगें खींचने के लिए कई हाथ आगे बढ़ जाते हैं और जब वही जाट कुछ उठकर एक विशेष मुकाम पर स्थापित हो जाता है तो वही टांग खींचने वाले हाथ उसके पैर पकड़ने को तैयार हो जाते हैं। यही आज के जाट के चरित्र में एक त्रासदी है। मैंने अपने सामाजिक जीवन के अनुभव में पाया कि लगभग हर जाट पीछे से एक दूसरे की बुराई करते हैं अर्थात् आगे कुछ और पीछे कुछ। जो जाट चरित्र के एकदम विपरीत है। आज जाट कौम में अपनी कौम के लिए दिल और दिमाग से काम करने वालों का भारी टोटा है। अधिकतर जाट अपने नाम और फोटो छपवाने के इंतजार में रहते हैं। यदि किसी मंच से भाषण का अवसर मिल जाए तो अपने को बड़ा वक्ता समझकर विषय से हटकर भाषण झाड़ने की आदत सी बन गई है। जिससे प्रतीत होता है कि लोगों को अपनी कौम का ज्ञान कम तथा अपने ज्ञान पर विश्वास ज्यादा है। जाटों में कहीं भी एकता नजर नहीं आती, इसका मुख्य कारण जाटों में अनेक विचारधाराएं जन्म ले चुकी हैं, उदाहरणस्वरूप - कम्युनिस्ट, आर्यसमाजी, राधास्वामी, ब्रह्मकुमारी, निरंकारी तथा सच्चा सौदा आदि, जो सभी जात-पात का विरोध करते हैं। इसलिए फिर ऐसी विचारधाराओं के अनुसार जाट अपनी जाति 'जाट' को जाट कैसे कहेगा। परिणामस्वरूप जाट कौम अपने कौमी मुद्दे बनाने में असफल हो रही है जो कौमी एकता के लिए अनिवार्य है। यही हकीकत है कि जब तब किसी परिवार, गांव, समाज, कौम (जाति) व देश के लिए कोई मुद्दा नहीं होगा तो फिर वे कैसे इकट्ठे हो सकते हैं? आज हमारे साथ यही हो रहा है। हम चाहे किसी भी मत को मानने वाले हों, सबसे पहले अपने को जाट समझना होगा।

इसमें कोई अंदेशा नहीं कि जाट कौम हमेशा से ही राष्ट्रवादी रही है। जात-पांत का विरोध करने वाले जाट ही अपनी कौम का सबसे अधिक नुकसान कर रहे हैं जो वास्तव में स्वार्थी हैं या अज्ञानी हैं या समाज से बहिष्कृत हैं। इसलिए जब तक हम अपनी कौम की बात करके अपने कौमी मुद्दे नहीं बनाएंगे तब तक कौम का उत्थान सम्भव नहीं है। जबकि हम प्रायः दूसरे समाजों के ठेकेदार बनकर समाज सेवा का ढोंग करते रहते हैं। वहीं दूसरी ओर अन्य जातियों में प्रेसर ग्रुप अर्थात् दबाव समूह बने हुए हैं जो अपनी जाति की मांगों को मनवाने के लिए सरकारों पर दबाव बनाते रहते हैं और यही लोकतन्त्र में आवश्यक भी है। उदाहरण के लिए हर चुनाव से पहले लगभग हर जातियां अपनी जातियों के लिए अपनी

जनसंख्या के अनुपात से कई गुणा अधिक सीटों की मांग करते रहते हैं, लेकिन जाट कौम इस बारे में बहुत पीछे है। जाटों में निजी स्वार्थ के लिए आज बड़ी राजनीतिक जागरूकता है। लेकिन यह स्वार्थी जागरूकता भी एक पागलपन तक नहीं होनी चाहिए। कभी कोई किसी भी पार्टी का शासन हो जाटों ने आपस में मिल जुलकर अपने तथा अपनी कौम के काम निकलवाने चाहिएं। इसी प्रकार हर जाट अधिकारी और कर्मचारी का यही फर्ज और धर्म है कि वह कौम की हर संभव सहायता करे जैसे कि ब्राह्मण और हिन्दू पंजाबी शरणार्थी करते हैं। केवल जाट के पैदा होने से जाट नहीं हो जाता, उसका आचरण भी जाट जैसा होना चाहिए। इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है कि जाट कौम में प्रचार करके इतनी जागरूकता पैदा की जाए कि वे अपनी नजरें दिल्ली की कुर्सी तक गड़ाएं और बार-बार अपना दावा जताते रहें। भारत में ही नहीं पूरे संसार में सभी जातियों ने तरक्की की है, लेकिन हमारे देश में जाटों को जितनी तरक्की करनी चाहिए थी उतनी नहीं की यह धरातल पर सच्चाई है। इसका मुख्य कारण जाट कौम को एक्सपोजर (अनावृत) नहीं मिल पाया। उसका भी कारण है कि सभी आधुनिक सुविधाएं शहरीकरण के कारण शहरों में चली गई जबकि जाट कौम एक ग्रामीण कृषक कौम होने के कारण आज भी इसका 90 प्रतिशत भाग गांवों में रहता है। दूसरा हम सन् 1947 से ही भूल कर रहे हैं कि अभी तक हमारा कम से कम 50 प्रतिशत भाग शहरों में आ जाना चाहिए था जिससे हमारा एक्सपोजर भी बढ़ता और साथ-साथ शहरों के शासन पर कब्जा भी हो जाता। इसी के साथ-साथ गांव की जमीन (कृषि) पर इतना भारी दबाव भी नहीं आता और गांव में मारा-मारी भी कम होती। लेकिन इन सभी के बावजूद मुझे यह लिखने में गर्व का अनुभव होता है कि आज भी उत्तर भारत की किसी भी जाति से अधिक संकट के समय जाट कौम में इकट्ठा होने की ताकत है।

इसमें कोई दूसरी राय नहीं कि जाट कौम भारत वर्ष में शारीरिक तौर पर अधिक हष्ट-पुष्ट है और यह वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग रहता है। लेकिन आज गांव के जाटों की यह ऊर्जा आपसी झगड़ों, मुकदमों और मार-पिटाई में बर्बाद हो रही है। अर्थात् गांव का माहौल नकारात्मक और विनाशकारी बनता जा रहा है। जबकि स्वस्थ दिमागी ऊर्जा को शिक्षा में और स्वस्थ शारीरिक ऊर्जा को खेल में इस्तेमाल होना चाहिए जो दुर्भाग्यवश दोनों का पूर्ण इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। जाट कौम के युवा वर्ग के लिए खेल क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं जिसके दोहन की परम आवश्यकता है। साथ-साथ व्यवसायिक खेलों में जैसे कि गोल्फ तथा लॉन टेनिस आदि में भी जगह तलाशनी होगी। अभी समय आ गया है कि जाट कौम शिक्षा क्षेत्र और खेल क्षेत्र में 'हल्ला-बोल' अभियान चलाए।

जो जाट भाई जात-पांत का विरोध करते हैं उनसे अनुरोध है कि वे देश के सम्पूर्ण सामाजिक ढांचे को समझने का प्रयास करें। हमारे राष्ट्रपिता गांधी ने जात-पांत के बारे में कहा था-'जात-पांत के कारण हिन्दू समाज स्थिर रहा है। यही नहीं, स्वराज के बीज भी जाति व्यवस्था में पाए जाते हैं।' डॉ० अम्बडेकर को भारतीय संविधान का रचयिता कहा जाता है, ने कहा था- "जब तक जातीयता का अहसास न हो, राष्ट्रीयता हो ही नहीं सकती।" विनोबा भावे आदि भी जात-पांत के कट्टर समर्थक थे। पं० नेहरू तो ब्राह्मण सभा के सदस्य तक थे। पं० नेहरू ने सन् 1953 में गौड़ ब्राह्मण सभा का उदघाटन भी किया था। जब सन् 1947 में पं० नेहरू देश के प्रधानमन्त्री बने तो ब्राह्मणों ने यज्ञ रचाकर उन्हें बुलाया और उन्हें गंगा जल पिलाकर 'राजडंडा' भेंट किया था। विद्वान् व विख्यात लेखक श्री वी.टी. राजेश्वर अपनी पुस्तक 'राष्ट्र में अनेक राष्ट्र' में इस सच्चाई को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - 'हमारे देश में जाति विहीन समाज की स्थापना कभी नहीं हो सकती। जात-पांत विरोधी नारा आज वे ऊंची जातियां लगा रही हैं जिनकी पहले से ही प्रशासन पर मजबूत पकड़ रही है और उन्हें डर है कि कहीं दूसरी जातियां जागरूक होकर मजबूत हो गई तो उनकी पकड़ ढीली पड़ जाएगी।' मैं जानता हूं कि यह पुस्तक नेहरू गांधी के नारे लगाने वालों को रास नहीं आएगी।

जाटों का देश के तीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत की किसी भी एक जाति से अधिक योगदान है - कृषि-क्षेत्र, खेल-क्षेत्र

तथा रणक्षेत्र। केन्द्रीय अनाज भण्डार में जाटों का लगभग 70 प्रतिशत योगदान है तो खेलों में जाटों ने सबसे अधिक अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी दिये हैं। लड़ाई के मैदान में जाटों का कोई सानी नहीं है। कारगिल युद्ध को ही लें तो जहां भारत के 539 सपूत शहीद हुए जिनमें से 340 जाट पुत्र थे तथा 124 जटपुत्र तो केवल हरयाणा राज्य से ही थे। कहने का अर्थ है कि जब जाट कौम का योगदान देश के लोगों का पेट भरने और उनकी सुरक्षा करने में सबसे बड़ा है तो इनके लिए बोनस (सरकारी सहायता) भी उतना ही बड़ा होना चाहिए। जबकि बोनस की बात तो छोड़ो कोई प्रशंसा करने तक भी तैयार नहीं है। इसके विपरीत जिन जातियों का इन क्षेत्रों में नाममात्र का भी योगदान नहीं वे मलाई खा रहे हैं और साथ-साथ समय-समय पर हमें आंखें भी दिखा रहे हैं। जाट कौम जिस दिन इस अन्याय को समझ जाएगी और अपनी ताकत को पहचान जाएगी तो वह दिन दूर नहीं होगा जब जाट कामै 'जटलैण्ड' की मांग करेगी। क्योंकि आज इस देश में इसी संविधान के अधीन 12 लाख नागाओं का नागालैण्ड, 3 लाख बोडो का बोडोलैण्ड और 2 लाख गोरखाओं का गोरखालैण्ड हैं तो फिर चार करोड़ जाटों का 'जटलैण्ड' क्यों नहीं हो सकता?

याद रहे जिस जाति का इतिहास और ग्रन्थ नहीं होता वह जाति भटकी हुई, दिशाहीन और गूंगी होती है।

जाटों को लुटेरे लिखने वाले भूल गए कि आज देश में एक ऐसा शोषक वर्ग है जिन्हें असली लूटेरा कहा जा सकता है। उन्होंने सन् 1947 के बाद विपुल धन-सम्पदा अर्जित कर ली है और वे जानते हैं कि उस सम्पदा की सुरक्षा केवल देश इकट्ठा रहने से ही हो सकती है इसलिए जब-जब भी देश पर संकट आने की आशंका होती है तो ये लोग देशभक्ति के तराने छेड़ने लगते हैं ताकि जाट कौम और कमेरा वर्ग देश की सुरक्षा में भी अपने आपको बलिदान करते हुए इनकी सम्पदा की सुरक्षा बनाए रखे। इसलिए इस तथ्य को मैंने अपनी पुस्तक में अनेक उदाहरण देकर सिद्ध किया है कि 'असली लुटेरे कौन हैं?' जाट भाइयो, शिक्षित बनो ! संगठित रहो ! संघर्ष करो ! और गर्व से कहो कि हम जाट हैं।

भाई जोशपाल दहिया खजूरी (दिल्ली) का इस मिशन में विशेष सहयोग रहा है।

इस संस्करण को छपवाने के लिए कर्नल मेहर सिंह दहिया (शौर्य चक्र) ने एक हजार कापियों के लिए अग्रिम राशि देकर विशेष प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त चौ० उमराव सिंह सांगवान (पूर्व ए.सी.पी.), चौ० सुभाष श्योराण (पूर्व डिप्टी कमाडेंट), चौ० महावीर सिंह दहिया (पूर्व ए.सी.पी.), सुखबीर सांगवान, पुत्र बलवान सिंह सांगवान गांव डोहकी और चौ० जयसिंह राणा गांव पाकस्मा जिला रोहतक (निवास मीरा बाग, दिल्ली) का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को छपवाने में योगदान दिया। चौ० ओमपाल आर्य ने भी इस पुस्तक के समापन पर अपना योगदान दिया है।

जो भरा नहीं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।

वो जाट नहीं वो जाहिल है, जिसे अपनी कौम से प्यार नहीं।।

- हवासिंह सांगवान जाट पूर्व कमांडेंट, सी.आर.पी.एफ.

प्रस्तावना

कमांडैन्ट हवासिंह सांगवान द्वारा लिखित असली लुटेरे कौन? नामक पुस्तक का पाँचवाँ संस्करण आ रहा है। इस पुस्तक के अब तक चार संस्करणों का छपना और बिकना इस की लोकप्रियता का पर्याप्त प्रमाण है। वैसे तो यह पुस्तक 2006-07 में उठे जाटों को लुटेरे लिखे जाने की प्रतिक्रिया स्वरुप ही लिखी गई थी। क्योंकि केन्द्रीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम की पुस्तकों में साम्यवादी लेखक विपिनचन्द्रा ने बृज के जाटों को लुटेरा लिख दिया था। उस समय सारे ही जाट जगत् में बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। हरियाणा के तो लगभग सभी नगरों में स्थान-2 पर विरोध-प्रदर्शन भी हुए थे। जिस प्रकार पौराणिक कथा है कि समुद्र-मन्थन से अमृत निकला था, उसी भाँति उस विवाद की ही उपलब्धि प्रस्तुत पुस्तक 'असली लुटेरे कौन?' है।

इस पुस्तक में लेखक ने जाटों के जौहर नामक अध्याय लिखकर जाटों का वीरतापूर्ण इतिहास ही लिखा है। इस विषय में उन्होंने दिल्ली के पुरातत्वीय महत्त्व के कुतुब मीनार जैसे भवनों और स्वयं दिल्ली को विक्रमादित्य के उपराज्यपाल दिल्लेराम उर्फ दिल्लू के द्वारा निर्मित माना है। यह घटनाक्रम तीसरी-चौथी शताब्दी का है। इस काल के पूर्व के प्राचीन नगरों का परिचय नहीं मिलता, हाँ महाभारत ग्रन्थ में इन्द्रप्रस्थ का नाम अवश्य मिलता है लेकिन उसकी अब स्थिति निश्चित नहीं है। जबकि पौराणिक पण्डितों ने दिल्ली को तंवरों (राजपूतों) द्वारा ही आधारित बताया है जो कि बाद में हुए हैं। इस पुस्तक के आरम्भिक दस अध्यायों में विद्वान लेखक ने जाटों के देशों और विदेशों में किए गए प्रबल पराक्रमों एवं उनके साम्राज्यों का भी संक्षिप्त विवरण दिया है। ईरान,रुस, चीन, रोम (जिप्सी) और स्केन्डिनेवियन देशों तथा यूरोप महाद्वीप तक जाट जाति के गौरवशाली विजय अभियानों का संक्षिप्त इतिहास लेखक ने दिया है। इस प्रकार से उन्होंने जाटों को विश्वव्यापी एक योद्धा और कृषक प्रजाति (Race) ही सिद्ध किया है जो कि तर्कसंगत है। क्योंकि देशी और विदेशी नेतृत्व शास्त्रियों और इतिहासज्ञों के उदाहरणों के द्वारा भी सांगवान साहब ने अपने कथन को प्रमाणित किया है।

यही नहीं, लेखक ने जाटों के प्राचीन गांवों को वास्तविक उत्तराधिकारी मानते हुए उन्हें ही पंचायत परम्परा के और वर्तमान प्रजातान्त्रिक प्रणाली के पुरोधा भी माना है। भरतपुर का लोहागढ़ अंग्रेजों के लिए अजेय रहा और इस रियासत ने बर्तानिया सरकार को कभी खिराज नहीं दिया। इसी प्रकार से धौलपुर नरेश ने ही मालवीय जी की सभी शर्तों को पूरा करके 1932 में बिरला मन्दिर का शिलान्यास किया। क्योंकि किसी भी जाट-शासन ने समर्पण अथवा संधि करके अपने कुलों की कन्यायें मुगलों के साथ नहीं ब्याही थी। बल्कि उन्होंने उल्टे मुगलों को संधि के लिए विवश करके उनसे उनकी कमनीय कन्याओं के डोले लिए थे। दिल्ली और आगरा के मुगल राज्यसत्ता केन्द्रों को जाटों ने ही सर्वप्रथम विजित किया था यह हमें नहीं भूलना चाहिए।

इसके साथ ही साथ, सांगवान साहब ने जाट जाति की चरित्रगत विशेषताएँ भी स्पष्ट की हैं। उन्होंने शत्रु के सामने झुक कर समझौता करना नहीं सीखा। इस विषय में वीरवर गोकुला, राजा नाहर सिंह और मुरसान नरेश महान् त्यागी राजा महेन्द्रप्रताप सिंह एवं शहीद-ए-आजम भगतसिंह के उदाहरण सटीक ही दिये हैं। दूसरी उच्चतम विशेषता है कि जाटों ने धर्मनिरपेक्षता को ही माना है। क्योंकि आज भी जाट जनगण हमें वैदिकधर्मी आर्यसमाजियों से लेकर एकेश्वरवादी इस्लाम (पाकिस्तान) में मिलता है। तो यूरोप में वह बौद्धधर्मी से निष्कृत करूणामूलक ईसाई धर्म में दीक्षित हैं। कहने का भाव यह है कि जाट लोग बजाय धर्म और सम्प्रदाय के रक्तसम्बन्ध की एकता को ही अधिमान देते हैं। साम्प्रदायिक मुस्लिम जिन्ना पर संयुक्त पंजाब में चौधरी छोटूराम की विजय का यही कारण था।

इस पुस्तक के पन्द्रहवें प्रकरण में लेखक ने भारत की वास्तविक गुलामी के संस्थापक कौन? में वर्यस्ववादी शोषक वर्गों की कलई खोली है जिन्होंने देश के साथ विश्वासघात करके भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा था। इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम पौराणिक पुरोहितवाद को ही उत्तरदायी ठहराया है, जिसने बौद्धधर्मी, कश्मीरी शासक को पन्द्रहवीं शताब्दी में बलात मुस्लिम बनने के लिए बाध्य कर दिया था जिसके परिणामस्वरूप हिन्दूबहुल काश्मीर मुस्लिमबहुल बन गया था। सिन्ध में भी ब्राह्मण पुरोहितों की इसी दमनकारी और देशद्रोहपूर्ण भूमिका का रहस्योघाटन लेखक ने किया है। विशेषकर बौद्धधर्मी जाट जनगण के विरुद्ध ब्राह्मण शासक चच-दाहिर का आचरण प्रतिशोध मूलक था। यही स्थिति ब्राह्मण पुरोहितों की बौद्ध धर्मी शासकों के पतन में मगध और कन्नौज में भी रही थी।

जाट इतिहास के कुछ अनछुए अध्यायों का भी अनुसंधान सांगवान साहब ने किया है। जैसे कि जिस हेमचन्द्र विक्रमादित्य को प्रायः बनिया अथवा भार्गव ब्राह्मण माना जाता है, उन्होंने उसे सप्रमाण तिजारा के देवती गांव का जाट सिद्ध किया है। शोरे का व्यापारी होने से ही इतिहासकारों ने उसको बणिया मान लिया है। यह उनकी नई खोज ही है। इस पुस्तक के 16वें प्रकरण से लेखक का दृष्टिकोण बजाय विवरण के विचारात्मक अधिक हो गया है। उन्होंने कृषक केसरी चौ० छोटूराम जी की शिक्षाओं के आलोक में ही जाट किसानों की वर्तमान स्थिति का आकलन और अवलोकन किया है। यहाँ पर सांगवान साहब ने जाटों एवं अन्य किसान जातियों को शहरी और स्वर्णशोषकों के सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक एकाधिकार के प्रति सचेत किया है।

जहाँ पर उन्होंने शहरी और स्वर्ण ब्राह्मण-बनिया और पंजाबी खत्री गठजोड़ को किसान हितों के विरुद्ध पाया है, वहीं पर उन्होंने परिष्कृत पुरोहितवाद के रूप में स्वामी दयानन्द और उनके आर्यसमाज की क्रान्तिकारी भूमिका पर भी उंगली उठाई है। विशेषकर हरियाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश के जाट किसानों को पुनः ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था एवं जटिल कर्मकांड में उलझाने में आर्यसमाज की भूमिका भी निर्णायक बतलाई। विशेषकर अयोध्या आन्दोलन के सन्दर्भ में। स्वर्णशोषकों का किस प्रकार से इस देश में सरकारी सेवाओं से लेकर राजनीति तक अघोषित आरक्षण है,यह भी लेखक ने आंकड़ों के साथ दर्शाया है। इसीलिए उसने जाट जैसी किसान जातियों को आरक्षरण हेतु कटिबद्ध किया है। आज किसान लोग किस प्रकार अपनी ही कृषि भूमियों से आर्थिक नीतियों के चलते विस्थापित हो रहे हैं, यह भी लेखक ने दर्शाया है। पुस्तक पठनीय और विचारोत्तेजक है। इसका अध्यायों में वर्गीकरण तथा पुस्तकालय संस्करण भी हो तो और भी अच्छा है।

- डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार वरिष्ठ प्रवक्ता, सनातन धर्म कालेज, पलवल।

भूमिका

एन.सी.ई.आर.टी. अर्थात् नेशनल कोंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रनिंग, जो केन्द्र सरकार के अधीन पूरे देश में शिक्षा की एक जिम्मेवार संस्था है, जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। यही संस्था सारे देश में केन्द्रीय विद्यालयों के लिए पाठ्यक्रम तैयार करती है। छठी कक्षा की इतिहास की पुस्तक तथा 10+2 कक्षा की इतिहास की पुस्तक में जाट जाति को डाकू व लुटेरा लिखा गया है। यह कई वर्षों से लिखा चला आ रहा है। इस प्रकार की विचारधारा वाले लेखकों की

एक मण्डली रही है जिसमें विशेष रूप से विपिनचन्द्र, डॉ. रोमिला थापर व मैडम दत्ता आदि जैसे कम्यूनिस्ट तथा ब्राह्मणवादी विचारधारा के लेखक रहे हैं, जिन्होंने जाटों के विरुद्ध ऐसी टिप्पणियाँ सरकारी तौर पर लिखकर बच्चों को जाटों के बारे में अनुचित जानकारी देने का प्रयास किया है।

इन लेखकों से मेरे कुछ निम्नलिखत प्रश्न हैं कि -

- i) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सन् 1857 में अम्बाला व मेरठ आदि अंग्रेजी सैनिक छावनियों के शस्त्रगृहों से हथियार व गोला बारूद लूटने वाले क्रान्तिकारी क्या डाकू व लुटेरे थे?

- ii) 9 अगस्त सन् 1925 को हरदोई से लखनऊ जाने वाली 6 डाउन यात्री रेलगाड़ी से काकोरी रेलवे स्टेशन पर इस गाड़ी में लदा अंग्रेजों का खजाना लूटनेवाले रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशनसिंह व मन्मथनाथ गुप्त आदि क्या डाकू व लुटेरे थे?

- iii) देश की आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों के अधीन पुलिस से हथियार व गोला बारुद लूटनेवाले सरदार अमर शहीद भगतसिंह संधु के साथी सरदार करतारसिंह ग्रेवाल व सरदार बन्तासिंह आदि क्या डाकू व लुटेरे थे?

यदि आप स्वीकार करते हैं कि ये सभी डाकू व लुटेरे थे तो मेरा कहना है कि आज भारत में रहने वाले लगभग 3 करोड़ 80 लाख जाट जो अपने लगभग 4800 गोत्रों, 600 खापों के साथ लगभग 25000 गाँवों व कस्बों में रहने वाले सभी के सभी जाट डाकू व लुटेरे हैं, जिसका मुझे तथा मेरी जाति को गर्व है।

यदि नहीं, तो फिर आप अंग्रेजों के हथियार, गोलाबारूद व खजाना लूटनेवालों को क्रान्तिकारी और देशभक्त मानते हैं तो आपने मुगलशासकों व नवाबों के हथियार, असबाब व खजाना लूटने वाले जाटों को लुटेरा कैसे लिख दिया? जाटों ने मोहम्मद गजनी (सन् 1025) से लेकर बहुझौलरी के अदना नवाब (सन् 1865) तक व उनके सहायक, शुभचिन्तक व पिट्ठुओं तक को जी भरकर लूटा। एक बार नहीं, बार-बार लूटा और पीटा। एक दिन नहीं, लगभग 800 सालों तक लूटा-पीटा।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या सन् 1857 का गदर कहें, जाटों ने अंग्रेजों के विरुद्ध उत्तर भारत में भयंकर लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों को लगभग 9 महीने तक चैन से नहीं बैठने दिया। ये अपने आप में एक बहुत विशाल इतिहास है जिसका संक्षेप में वर्णन इस पुस्तक में आगे भी किया गया है।

जब संग्राम विफल हो गया तो अंग्रेजों ने केवल वर्तमान हरयाणा क्षेत्र में ही 134 गाँवों को जला दिया तथा 51 गाँवों को नीलाम कर दिया था। हजारों लोगों को सामूहिक फांसियों पर लटकाया गया। महम में चौ० आशाराम के नेतृत्व में जो क्रान्ति की लड़ाई लड़ी गई, विफल होने पर चौ० आशाराम व उनके साथियों को चौराहे पर फाँसी दे दी गई। इसी स्थान को आज आजाद चौक के नाम से जाना जाता है। सोनीपत जिले के गांव लिबासपुर के जाट उदमीराम की अगुवाई में इसी गांव के जाट वीर गुलाब, जसराम, रतिया आदि अनेक जाटों ने अंग्रेजों की ईंट से ईंट बजाई। मुरथल के वीर योद्धा सुरताराम व उनके बेटे जवाहर, बाजा नम्बरदार, पृथ्वीराम, मुखराम, राधे तथा जैमल आदि ने अंग्रेजों पर कहर बरपाया। इसी प्रकार खामपुर, अलीपुर, हमीदपुर व सराय आदि सैकड़ों गांवों का यही इतिहास है। अलीपुर के हंसराम व तोताराम की बहादुरी को भी भुलाया नहीं जा सकता। लेकिन जाटों के इस स्वर्णिम और गौरवशाली इतिहास को पं० नेहरू व इसकी चाटुकार सरकार की नीतियों ने दफन कर दिया और देश आजाद होने पर भी अंग्रेजों को खुश रखने के

लिए उन ऐतिहासिक घटनाओं पर पानी फेर दिया। जबकि सैकड़ों गांवों के इन जाट वीरों को बेघर कर दिये जाने पर भी इतिहास में उनकी कभी कोई बात नहीं की गई। इसी प्रकार हांसी में एक सड़क का नाम ही खूनी सड़क या लाल सड़क पड़ा। यही कहानियाँ करनाल, जीन्द, हिसार, रोहतक व झज्जर आदि की हैं।

उत्तर प्रदेश के जाटों का 1857 के विद्रोह में महान् योगदान था जिसका सम्पूर्ण इतिहास अलग से लिखा जा सकता है। इन्हीं कारणों से मुगलों व अंग्रेजों ने अपने 'तारीखों' तथा 'गजटों' में बार-बार जाटों को डाकू व लुटेरा लिखा है। जाटों के सांगवान गोत्र के प्रवर्तक चौ० संग्रामसिंह उर्फ सांगू को नवाब हिसार व झज्जर के तारीखों में एक खूंखार डाकू लिखा है क्योंकि उन्होंने मुगलों के खजाने दादरी क्षेत्र (हरयाणा) से पश्चिम में आने-जाने पर लूट लिये थे। (सांगवानों का मूल गोत्र कश्यप है) प्राचीन हरयाणा का अर्थ मुगलों व अंग्रेजों ने 'हर-लेना' निकाला अर्थात् लुटेरों का प्रदेश कहा। जबकि अर्थ है 'हर+आना' अर्थात् वह क्षत्रे जहाँ सबसे पहले हर (शिव) का आगमन हुआ। प्राचीन हरयाणा में इसका प्रवेशद्वार हरद्वार था, इसकी पूरी परिभाषा ही बदल डाली तथा सन् 1857 के बाद इस प्रदेश को छिन्न-भिन्न कर दिया गया और अंग्रेजों ने बंदरबाट में प्राचीन हरयाणा क्षेत्र के बावल क्षेत्र को नाभा रियासत, नारनौल क्षेत्र को पटियाला रियासत तथा दादरी क्षेत्र को जीन्द रियासत को इनामस्वरूप दे दिया गया। जमना पार का क्षेत्र (दोआबा क्षेत्र को) यूनाईटिड प्रोविन्स राज में मिला दिया गया तथा दिल्ली, गुडगांव, रोहतक, हिसार व अम्बाला क्षेत्र को अंग्रेजों ने सीधे तौर पर अपने अधीन रख लिया। जिसका एक भाग 108 वर्ष बाद प्रथम नवम्बर 1966 को पुनः जीवित किया। आज की दिल्ली इसी प्राचीन हरयाणा का एक जिला था, इसी जिले को जार्ज पंचम के सन् 1911 में भारत आगमन पर अंग्रेजों ने कलकत्ता की जगह दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया और उसी साल उन्होंने सर्वे करवाया जिसका पूरा विवरण आग जाटों की टूटती पीठ और बढ़ती पीड़ा में किया गया है। अंग्रेजों ने दिल्ली के स्वरूप को बिगाड़कर जाटों के भूगोल के साथ खिलवाड़ किया और इसी खिलवाड़ को भारत सरकार ने भी विकास के नाम पर आज तक जारी रखा है। यही आज का बिगड़ा हुआ भूगोल कल हमारा बिगड़ा हुआ इतिहास होगा। इतिहास तो फिर भी लिखा जा सकता है लेकिन भूगोल को बदलना असंभव है।

संसार का इतिहास गवाह है कि रूस, चीन, फ्रांस व भारत आदि के क्रान्तिकारी आंदोलनों का यही इतिहास है 'जहाँ सरकारी खजानों व शस्त्रागार आदि को क्रान्तिकारियों ने लूटा, जबकि इतिहासकार जाटों को डाकू व लुटेरा कहते हैं।' लेकिन जनता की स्वाधीनता तथा बहादुरी के लिए लड़नेवाले हर विद्रोही को सत्ता और शासन से टकराना पड़ता है, उसका खजाना, शस्त्रागार, बैल-घोड़े तथा युद्धसामग्री छीनकर या लूटकर अपनी सेना खड़ी करनी पड़ती है। जाट एक क्रान्तिकारी जाति रही, जिस कारण उसने यह कार्य सालों-साल किया, जो कोई बहादुर ही कर सकता है, जिसके सीने में सवा सेर का कलेजा तथा बाजुओं में ताकत हो। जाटों ने हमेशा अपनी इस ताकत का प्रयोग विदेशी सत्ताधारियों व आक्रमणकारियों के विरोध में भरपूर किया जो एक गौरव की बात है और जाटों को इस पर हमेशा गर्व होना चाहिए। याद रहे जाट कभी चोर नहीं थे, चोरी और लूट में दिन-रात का अन्तर है।

गुलामी का इतिहास है लम्बा, अभी कल ही की तो बात है ।

आजादी की यह जिन्दगी, जाट अमर शहीदों की सौगात है ॥

यहाँ विशेष बात ध्यान देने की है कि जिस प्रकार मुगलों व अंग्रेजों ने जाटों के बारे में जो टिप्पणियाँ कीं उसी लहजे में हमारे भारतीय इतिहासकारों ने टिप्पणियाँ कीं। हम जाट, मुगलों व अंग्रेजों के दुश्मन रहे, इसलिए उनसे हमें वही उम्मीद रखनी चाहिए थी जो एक दुश्मन दूसरे दुश्मन से रखता है। लेकिन भारतीय इतिहासकार भी यदि उसी तर्ज पर

हमारे खिलाफ टिप्पणियाँ करते हैं तो मामला बड़ा संगीन बनता है। इसके दो कारण हो सकते हैं । प्रथम यह कि यह हमारे भारतीय इतिहासकार जो जाटों के विरोध में लिख रहे हैं इनके पूर्वज मुगलों व अंग्रेजों के चाटुकार रहे या दूसरा फिर केन्द्र सरकार की मिलीभगत से यह सब हो रहा है। यह आजादी के बाद से ही हो रहा है, लेकिन बिहार से भाजपा के सांसद श्री रविशंकरप्रसाद जी ने जब इस प्रकार की टिप्पणियों का मामला दिनांक 18.08.2006 को संसद में उठाया और इसी को टी.वी. चैनलों पर दिखाया गया तो जाटों की थोड़ी नींद खुली और केवल हरयाणा में छुट-पुट प्रदर्शन हुए जिसमें कुछ राजनीतिज्ञ भी अपना स्वार्थ साधते नजर आये तथा प्रेस-नोट अखबारों में छपवाकर अपने कर्तव्य का निर्वाह कर लिया, वरना जाटों को प्रेस के पास जाने की आवश्यकता नहीं, प्रेसवाले खुद ही जाटों के पास पहुंच जाते। पंजाब के सिक्ख जाट जयपुर राजस्थान में एक सिक्ख बच्चे के केस काटने वाली घटना में उलझ गए, बाकी जाटों को सांप सूंघ गया। जाट मांग करते रहे हैं कि इन टिप्पणियों को पाठ्यक्रम से निकाला जाये। सवाल केवल पाठ्यक्रम से निकालने का ही नहीं था, बल्कि सवाल यह है कि किसने, कब, क्यों, कैसे और किस नीयत से इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया? इसकी विस्तृत जांच हो, जिसके लिए एक जांच कमेटी नियुक्त हो, जिसमें जाट महासभा के भी सदस्य सम्मिलित हों। क्योंकि यह जाट जाति के स्वाभिमान का एक बड़ा प्रश्न है तथा इस सच्चाई को जानने का हर भारतीय को पूरा-पूरा अधिकार है। इसके अतिरिक्त पूरे भारतीय इतिहास का फिर से विश्लेषण किया जाये तथा सच्चे इतिहास को पाठ्यक्रम की पुस्तकों में सम्मिलित किया जाये ताकि आनेवाली भारतीय संतान हमारी कमियों व अच्छाइयों पर खुले दिमाग से विचार करके भविष्य में समय अनुसार योजनाएँ तय कर सके। क्योंकि झूठा इतिहास पढ़ाने से एक झूठे घटनाक्रम का अहसास होता है लेकिन जब सच्चाई का पता चलता है तो इसका प्रभाव ठीक इसके विपरीत पड़ता है। जाटों से सम्बन्धित कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन आगे किया है जिनको बगैर किसी विलम्ब के पाठ्य-पुस्तकों में सम्मिलित किया जाये ताकि भारतीय सन्तान गौरव का अनुभव कर सके। अक्तूबर 2006 के अखबारों में समाचार आया कि हरयाणा के मुख्यमंत्री व कुछ अन्य जाट नेता भारत के शिक्षामंत्री (एच.आर.डी. मंत्री) से मिले और उनको विश्वास दिलाया कि ये टिप्पणियाँ आगामी संस्करण से निकाल दी जायेंगी। शायद इस आश्वासन के बाद काफी जाटों का सीना फूल गया होगा और वे अपनी सफलता पर खुशी मनाकर केन्द्रीय सरकार के अहसानमंद हो गये होंगे, लेकिन न तो इसमें कोई खुशी मनाने की बात है और न ही कोई आश्वस्त होने की। प्रश्न यह है कि ये टिप्पणियाँ कैसे लिखी गईं जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है तथा भारत के शिक्षा मंत्री ने भारत वर्ष के इतिहास का सच्चा आकलन करने के लिए क्या आश्वासन दिया? अभी समय आ गया है कि समूचे जाट इतिहास को विस्तार से लिखकर जन-जन तक पहुंचाया जाए तथा इसके विशेष अध्यायों को स्कूलों में पढ़ाया जाए। अभी तक जाट इतिहास लिखने के लगभग दर्जनभर प्रयास हो चुके हैं लेकिन सम्पूर्ण इतिहास का आकलन होना शेष है। जो शायद 4-5 खण्डों में पूर्ण होगा, जिसे कोई महान् इतिहासकार ही पूरा कर पायेगा। वर्तमान में डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार, डॉ. सुखीराम रावत व महीपाल आर्य सरीखे लेखक ही इस कार्य को कर पाएंगे। (पुस्तक - इतिहास का अध्ययन)

जाटों के कुछ जौहर

जाटों की बहादुरी पर कवि 'अब्दुल गफ्फार अब्बासी' अपनी कविता इस प्रकार आरम्भ करते हैं -

जब शत्रु ने नजर मिलाई रूई समझ के उसे धुना है। इसलिए इस देश में मैंने वीर बहादुर जाट चुना है ॥

- **1) जब सन् 1025 में (कुछ इतिहासकारों ने इसे सन् 1030 भी लिखा है) मोहम्मद गजनी सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण करने आया तो वहाँ के तत्कालीन राजा भीमदेव ने गजनी को संदेश भिजवाया कि उसे जितना धन चाहिए वह देने के लिए तैयार है लेकिन मंदिर को कोई नुकसान ना पहुंचाया जाये। इस पर गजनी ने उत्तर दिया "वह एक मूर्ति भंजक है, सौदागार नहीं और इसका फैसला उसकी तलवार करती हैं।" उस समय इस मंदिर में लगभग 1 लाख पण्डे पुजारी व देवदासियां उपस्थित थीं। पुजारियों ने कहा यदि गजनी की सेना मंदिर पर आक्रमण करती है तो वह अंधी हो जायेगी। लेकिन वही हुआ जो अंधविश्वास में होता आया। गजनी ने मंदिर को जी भरकर लूटा और मंदिर में स्थापित विशाल शिवलिंग की मूर्ति को तोड़कर इसके तीन टुकड़े किए। मंदिर के मुख्यद्वार के किवाड़ (जो चन्दन की लकड़ी से सुन्दर चित्रकारी के साथ बने थे) समेत सभी लूट लिया और इस लूट के माल को 1700 ऊँटों पर लादकर गजनी के लिए चला तो रास्ते में सिंध के जाटों ने इस लूट के माल का अधिकतर हिस्सा ऊंटों समेत छीन लिया। गजनी ने शिवमूर्ति के तीनों टुकड़ों को गजनी, मक्का और मदीना में पोड़ियों के नीचे दबवा दिया ताकि आने-जाने वाले के पैरों तले रौंदे जाते रहें।**

इस मन्दिर के वही किवाड़ लगभग 700 वर्षों बाद 6वीं जाट रॉयल बटालियन अफगान की लड़ाई जीतने पर इनको लूटकर लगभग 3000 कि.मि. खींचकर लाई जो आज भी जमरोद के किले (पाकिस्तान) में लगे हैं।

- **2) ब्रज क्षेत्र में किसानों के लिए लड़ाई लड़ने वाले वीर योद्धा गोकला जाट को जब औरंगजेब ने प्रथम जनवरी 1670 में आगरा में लाल किले के सामने आरे से कटवाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये तथा इनके साथी माडू जाट को जीते-जी खाल (चमड़ी) उतरवाकर शहीद किया, ये दोनों जाट वीर योद्धा इस प्रकार मुगल शासन में होने वाले भारत के पहले शहीद थे। लेकिन उस जगह पर आज तक उनकी न तो कोई यादगार है और न ही कोई स्मृतिचिन्ह है। इसके लिए जाट समुदाय भी तो कम दोषी नहीं है। उस समय तो जाटों ने इसका बदला लेने के लिए औरंगजेब की नाक के तले फतेहपुर सीकरी के किले व महल को वीर योद्धा राजाराम की अगुवाई में लूटा, फिर ताजमहल को लूटा। जब इस पर भी जाटों का गुस्सा ठण्डा नहीं हुआ तो उन्होंने फतेहपुर सीकरी में ही महान् अकबर के मकबरे को लूटकर उसकी कब्र को खोदा और उसकी अस्थियों को आग में जला डाला।**

- **3) इस लूट की पद्धति को ही छापामार पद्धति कहा गया, जिसे जाटों ने छठी सदी में ही सिंध में इजाद कर लिया था। इसी लड़ाई की पद्धति को आज गुरिल्ला वार-फेयर तथा जंगल वार फेयर आदि नामों से जाना जाता है। यह मौलिक रूप से जाटों की खोज थी जो अपने से अधिक ताकतवर के विरुद्ध लड़ने का एक तरीका है। इसी पद्धति के आधार पर आगरा, मथुरा व भरतपुर क्षेत्र में जाट व किसानों के नेता वीर योद्धा राजाराम के भाई चूड़ामन ने मुगलों का इस क्षेत्र से दक्षिण का रास्ता पूरी तरह अवरुद्ध कर दिया। इस रास्ते से आने-जाने वाले मुगलों के खजानों, उनके कारिन्दों, शुभचिन्तकों व उनके पिट्ठुओं को बुरी तरह कई वर्षों तक जी भरकर लूटा-पीटा और एक दिन मुगलों ने हाथ खड़े कर दिए और चूड़ामन को उस क्षेत्र का नेता मान लिया। इन्होंने इसी लूट के बल पर एक शक्तिशाली सेना खड़ी कर दी, जिसने भरतपुर की एक महान् रियासत की स्थापना का रास्ता साफ कर दिया और वे 'बेताज बादशाह' कहलाये।**

- **4) छत्रपति शिवाजी (बालियान गोत्री जाट) मराठा ने इसी छापामार युद्ध की पद्धति के बल पर दक्षिण में मुगलों को खूब लूटा। शिवाजी के साथियों को इस छापामार युद्ध की पद्धति सिखलाने के लिए उनके धर्मगुरु रामदास के कहने पर इस पद्धति के विशेषज्ञ मोहनचन्द्र जाट तथा हरिराम जाट को प्राचीन हरयाणा से भेजा गया था। यही लोग दक्षिण के शक्तिशाली मराठा राज की नींव डालने के आधार बने। यही जाट लड़ाकू शिवाजी फिर ब्राह्मणवाद के जाल में फंस गये जिस कारण इनका राज बाद में पेशवा ब्राह्मणों के हाथ में चला गया।**

(विस्तार से इसके बारे में आगे पढें)। इसी प्रकार दक्षिण के एक प्रमुख राज विजयनगर की सेना को छापामार युद्ध पद्धति सिखलाने के लिए प्राचीन हरयाणा से सर्वखाप पंचायत ने शंकरदेव जाट, ऋषलदेव जाट, शिवदयाल गुर्जर, ओझाराम खाती, शीतलचन्द रोड़ तथा चण्डीराम राजपूत को वहाँ के राजा के आग्रह पर भेजा तथा इसी बल पर इस राज को मजबूती मिली जो 250 वर्षों तक चला।

- 5) इतिहास साक्षी है कि सन् 1749 में मोती डूंगरी की लड़ाई में महाराजा सूरजमल ने एक साथ मराठों, चैहानों, सिसोदियों तथा हाड़ाओं को हराया था। याद रहे इस महान् राजा सूरजमल के पूर्वज बेताज बादशाह चूड़ामन ने जोधपुर के राजा अजीतसिंह की पुत्री इन्द्रा कुमारी पठानों के बादशाह फर्रुखसियर के हरमखाने से आजाद कराके राजा अजीतसिंह को सौंपी थी।

- 6) जब 25 दिसम्बर 1763 को महाराजा सूरजमल को शाहदरा में मुगलों ने लड़ाई की तजवीज बनाते हुए धोखे से मार दिया जो अपने समय के सम्पूर्ण एशिया में एक महान् शासक माने जाते थे (पुस्तक - जाट और मुगल साम्राज्य - डॉ जी.सी. द्विवेदी) तो इसका बदला लेने के लिए उनके पुत्र महाराजा जवाहरसिंह ने सन् 1764 में लाल किले पर आक्रमण किया और 5 फरवरी को लगभग 11 बजे इस किले को फतेह कर लिया। राजा होलकर तथा पुरोहितों की जलन की वजह से दो दिन पश्चात् मुगलों से नजराना लेकर किले से अपनी सेनाएं हटाईं तथा मुगलों की शान कहे जानेवाला काले संगमरमर का मुगलों का सिंहासन तथा लाल किले के किवाड़ यादगार के तौर पर जाट छीन लाये और यह सिंहासन आज डीग के महलों की शोभा बढ़ा रहा है तथा लाल किले के किवाड़ भतरपुर में अजयगढ़ के किले में लगे हैं। भारतीय इतिहास इस सच्चाई को उजागर क्यों नहीं करता कि यही किवाड़ चित्तौड़गढ़ के किले को जीतने पर मुगल वहां से उठाकर लाए और लाल किले में लगवा दिये गए थे। लेकिन स्वाभिमानी जाट सरदार इन्हें लाल किले से उखाड़कर भरतपुर ले गए थे। इससे पहले भी एक बार गुस्साये जाटों ने मुगलों की दिल्ली (बाजारों) को 9 मई से 4 जून 1753 को जी भरकर लूटा जिसे 'दिल्ली की लूट' व 'जाट गर्दी' मे नाम से जाना गया। इसीलिए एक कहावत प्रचलित हुई "जाट जितना कटेगा, उतना ही बढ़ेगा।"

- 7) पंजाब में 12 'मिसलें' होती थीं जिनमें 10 'मिसलें' जाटों की थीं। करोड़िया मिसल के सरदार बघेलसिंह ढिल्लों थे, जिन्होंने सन् 1790 में दिल्ली पर धावा बोल दिया और मुगलों की दिल्ली को जी भरकर लूटा और लालकिले पर जा धमका था, जिसकी तीस हजार फौज ने जहाँ कैम्प लगाया उसी जगह को आज तीस हजारी कहते हैं और आज वहीं दिल्ली का तीस हजारी कोर्ट है। इसी वीर योद्धा बघेलसिंह ने इससे पहले सन् 1766 में लुटेरे अब्दाली को पंजाब में घायल कर दिया था और उसके चंगुल से हजारों स्त्रियों को छुड़वाकर उसका कारवां लूटा। इतिहास गवाह है कि किसी भी विदेशी आक्रमणकारी को पंजाब के जाटों ने न तो आसानी से कभी उसे देश में घुसने दिया और ना ही कभी पूरे लूट के माल के साथ वापिस जाने दिया। यह पंजाब के जाट वीरों का एक विशाल इतिहास है जो आज तक भारतीय इतिहास का हिस्सा नहीं बन पाया। इसी वीर योद्धा को आखिर में दिल्ली में मुगलों ने तीन लाख का नजराना भी दिया और इसी पैसे के बल पर सरदार बघेलसिंह ढिल्लों ने दिल्ली में दो साल रहकर गुरुद्वारे बनवाये। दिल्ली में जितने भी प्राचीन गुरुद्वारे हैं वे सभी उन्हीं के बनवाये हुए हैं। सिक्खों के 10वें गुरु गोविन्दसिंह जी ने भगाणी तथा नादोण की लड़ाइयों में मुगलों का काफी हथियार, गोलाबारूद व संपत्ति को छीना था।

- 8) लगभग 230 इ.पू. महान् सिकन्दर की वापसी पर व्यास नदी पार करते समय खोखर जाटों ने उसे घायल किया, जो बेबीलोन में मर गया। इसकी फौज को वहाँ जाटों ने खूब लूटा। लेकिन इतिहास को तोड़मरोड़कर पेश

किया गया तथा खोखर जाटों को एक जाति लिख दिया, जबकि संसार में कोई भी खोखर जाति नहीं। इसी प्रकार हमारे मंड या मेड गोत्र को भी इतिहास में जाति लिखा है। यह गोत्र सिख तथा मुस्लिम धर्मी जाटों में अधिक है। ये तो जाटों के बहादुर, लड़ाकू तथा शासक गोत्र रहे हैं, जिस गोत्र के यूरोप में ईसाई जाट, मध्य एशिया तथा पाकिस्तान में मुस्लिम जाट और भारत में हिन्दू व सिक्ख जाट हैं। भारत में पाकिस्तान के भूतपूर्व राजदूत श्री रियाज खोखर इसी गोत्र के मुसलमान जाट हैं। इसी प्रकार पृथ्वीराज चौहान के हत्यारे मुहम्मद गौरी, जिसे शाहबुद्दीन गौरी भी कहा जाता है, लाहौर के पास रामलाल खोखर नाम के वीर जाट योद्धा ने दिनांक 15 मार्च सन् 1206 को अपनी तलवार से उसका सिर कलम कर दिया। जिस पर उसकी सेना में भगदड़ मची, जिसको जाटों ने जी भरकर लूटकर दरबदर कर दिया।

- **9) इसी प्रकार सन् 1834 में महाराजा रणजीतसिंह ने पेशावर के सुल्तान शाहशुजा को हराकर भारतवर्ष की अमानत 'कोहिनूर हीरा' 500 वर्षों बाद छीनकर वापिस लाये। यह हीरा अंग्रेजों ने महाराजा रणजीत सिंह के नाबालिक राजकुमार दिलीप सिंह से बहला कर ले लिया और रानी विक्टोरिया के ताज से होते हुए आज इंग्लैण्ड के अजायब घर की शोभा बढ़ा रहा है। आजादी के समय पं० नेहरू ने इसे अंग्रेजों के साथ समझौते में शामिल क्यों नहीं किया। क्या यह देश के स्वाभिमान का प्रश्न नहीं था? यह हीरा महाभारत के कर्ण को नर्मदा नदी में मिला था। इस जट पुत्र को महाभारत में शूद्रजाति का कहने का प्रयास किया गया है। इस हीरे का बड़ा लम्बा इतिहास है लेकिन संक्षेप में इतना ही है कि महाभारत से आज तक (सन् 2005) यह हीरा केवल 830 वर्ष जाटों के पास नहीं रहा है। (इसका इतिहास उपलब्ध है) । क्या बोनापार्ट नेपोलियन इसी जाट राजा के डर से ईरान से ही वापिस नहीं चला गया था?**

इसलिए स्वयं फ्रांसिसी इतिहासकार जैक्सो ने इन्हें "भारत का नेपोलियन" लिखा है। जिन मुगलों ने हमारे घर आकर हमें पीटा, उसका बदला इसी शेर जाट ने उनको उनके घर अफगानिस्तान व गजनी में जाकर लिया और उन पर शासन किया। इन्हीं के कारण पंजाब की जनता शेष भारत से 50 साल कम गुलाम रही। लेकिन भारतीय इतिहास ने इनको 'हिन्दकेसरी' न लिखकर 'पंजाब केसरी' बना दिया ताकि इनका इतिहास पंजाब तक ही सीमित रहे। यह भी इसलिए रहा क्योंकि ये सिक्खधर्मी थे, वरना इनके इतिहास का भी वही हाल होना था जो ब्राह्मणवाद ने महाराजा सूरजमल, महाराजा जवाहरसिंह, महाराजा रणजीतसिंह (पुत्र महाराजा सूरजमल), राजा महेन्द्रप्रताप व राजा नाहरसिंह आदि का किया। भला हो सिक्ख धर्म का जिसके कारण कम से कम पंजाब में तो इस बहादुर महाराजा के इतिहास को पूरा सम्मान दिया जाता है।

इतिहास गवाह है कि जिन मुगलों ने बहादुर कहे जाने वाले हिन्दू राजाओं की बहन व बेटियों के अनेक डोले लिये तथा हिन्दू जनता को रोंदा और बेइज्जत किया, उन्हीं मुगलों को जाटों ने लाल किले में पीटा, फिर भतरपुर से लेकर काबुल-कंधार तक पीटा।

- **10) जब बहादुर कहलाये जानेवाले राजस्थान के शेष राजा अपनी बहन-बेटियों के रिश्ते मुगलों से जोड़ रहे थे तो इसी राजस्थान के पिराणा नामक स्थान पर वीर योद्धा जीवनसिंह तथा राममल टोंक गोत्री जाट अपने साथियों से मिलकर बादशाह जहांगीर की बेगम से उनके इस क्षेत्र से गुजरने पर टैक्स वसूल कर रहे थे। यह जाटों का जोहर भी इतिहास के पन्नों में दर्ज है। इतिहास साक्षी है कि शेरशाह लोहान गोत्री जाटों के यहां नौकरी करता था और इसी कारण राजप्राप्ति में जाटों ने उसका साथ दिया। नतीजन हिमायूं जाटों से जलने लगा था। दूसरा बिलग्राम की लड़ाई में जाटों ने उसे खूब लूटा भी था। लेकिन हिमायूं हरयाणा की अहीर जाति पर दयालु था क्योंकि जब सन् 1540 में वह लड़ाई में हारा तो मैदान छोड़कर चन्द साथियों के साथ रिवाड़ी की तरफ भागा**

था। जब भूखा प्यासा खेतों से गुजर रहा था तो उसको गांव पेठरावास के एक अहीर किसान रूढ़सिंह ने उसे न जानते हुए पानी पिलाया तथा अपना खाना भी उन्हें खाने को दिया। किसान की प्रवृत्ति त्याग की होती है। जब पांच साल बाद हिमायूं दिल्ली के सिहांसन पर बैठा तो उसने किसान रूढ़सिंह को याद किया और उसे पांच गांव जागीर में दिये। यही जागीर उसके वंशजों ने बढ़ाई और सन् 1857 में राव तुलाराम के समय 87 गांव की हो गई थी।

पुस्तक वाकए राजपुताना में लिखा है कि रजिया बेगम ने कई बार जाटों की शरण ली। जाटों के जगह-जगह अलग-अलग काल में अनेक छोटे-बड़े राज रहे। इतिहासकार लिखते हैं कि सिन्ध में सिंधराज, गान्धार में सुभागसेन, मालवे में यशोधर्मा, पंजाब में शालेन्द्र और दिल्ली में महाबल ऐसे जाट योद्धा राजा हुए जिन्होंने जाट शब्द को बनाये रखने के लिए एकतन्त्र शासन को अपनाया।

- 11) इतिहास में जगह-जगह प्रमाण हैं कि भारतवर्ष के इतिहास का 'स्वर्ण युग' केवल जाटों के नाम है। भले ही पौराणिक ब्राह्मणवाद ने जाटों के इतिहास को बदसूरत करने में कोई भी कमी नहीं छोड़ी। एक से बढ़कर एक षड्यंत्र किये और जाटों को म्लेच्छ, शूद्र व कुजात तक लिखने में परेहज नहीं किया। भविष्यपुराण व पद्मपुराण में जाटों को शूद्र लिखा है। "चचनामा" में जाटों को चाण्डाल जाति लिखा। फिर एक षड्यन्त्र के तहत लाला सर शादीलाल मु० न्यायाधीश उच्च न्यायालय लाहौर से सन् 1932 में जाटों को शूद्र जाति घोषित करवाया लेकिन यह बातें क्यों भूल गए कि जैन ग्रंथों में ब्राह्मणों को भी 'तुच्छ' ब्राह्मण व 'नीच ब्राह्मण' लिखा गया है। कालिदास के साहित्य में भी महाब्राह्मण शब्द का विदूषक या महामूर्ख के लिए प्रयोग किया गया है। इसे निकृष्ट ब्राह्मण अर्थात् महापात्र या बुरिया ब्राह्मण भी कहा जाता है। (पुस्तक - हिन्दी मानक कोष से, सम्पादक रामचन्द्र वर्मा) जाटों के ऐतिहासिक सबूत मिटाने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन वे शत प्रतिशत कभी सफल नहीं हुए। इस पर डॉ. इकबाल का दोहा याद आता है -

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा ॥

महाराजा कनिष्क (कुषाणवंशीय जाट) से लेकर (सन् 73 ई०) से महाराजा हर्षवर्धन) (बैंस गोत्री जाट सन् 647 तक) सभी के सभी बौद्व धर्म के माननेवाले जाट राजा थे। कभी किसी हिन्दू राजपूत राजा ने बौद्व धर्म नहीं अपनाया क्योंकि यह कभी संभव नहीं था, क्योंकि उस समय तक इस जाति की उत्पत्ति नहीं हुई थी। सभी मौर्य राजा जाट मोरवंशज थे। गुप्त राजाओं ने अपने समय को भारतीय इतिहास का 'स्वर्णकाल' बना दिया। गुप्त इनको इसलिए कहा गया कि इनके पूर्वज मिल्ट्री गवर्नर थे, जिन्हें गुप्ता, गुप्ते व गुप्ती के नाम से जाना जाता था। इसलिए इस राज के संस्थापक राजा का नाम तो श्रीगुप्त ही था। इनके सिक्कों पर धारण लिखा पाया जाता है। क्योंकि इनका गोत्र व वंश धारण था, जो आज भी क्षत्रियवंशी जाटों में है। इनके राज प्रशासन से स्पष्ट हो जाता है कि इन्होंने कभी धर्म व जाति-पाति तथा ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं किया। साम्राज्य को प्रान्तों में बांटा गया था तथा पंचायतों को समुचित अधिकार थे। ब्राह्मणों को क्षत्रियों से श्रेष्ठ नहीं माना जाता था। इन्होंने शूद्र वर्ण की स्थिति का उल्लेखनीय सुधार किया। मांस व मदिरा से प्रायः परहेज था। एक आम आदमी का पहनावा धोती, पगड़ी और शाल था। यह पहनावा एक भारतीय इतिहासकार ने लिखा है। वरना जाटों में चूड़ीदार पायजामा, टोप, पगड़ी व दाढ़ी रखने का भी रिवाज रहा है। विधवा स्त्री को पुनः विवाह करने का पूरा अधिकार तथा कानूनी तौर पर वैध था, जो कभी भी अन्य किसी हिन्दूराज में नहीं हुआ। इन राजाओं की जाति के बारे में आज तक अलग-अलग मत हैं क्योंकि पौराणिक ब्राह्मणवाद की विचारधारावाले

लेखक कभी भी इनको जाट मानने के लिए तैयार नहीं, जबकि विद्वान् इतिहासकार डा. जे. पी. जायसवाल, विद्वान् एस.डी. गुप्त व विद्वान् इतिहासकार दशरथ शर्मा जैसे विद्वानों का स्पष्ट मत है कि ये पंजाब के जाट थे। राजस्थान इतिहास के रचयिता कर्नल जेम्स टॉड भी इन्हें जाट मानते हैं। डॉ० बी० एस० दहिया ने अपनी पुस्तक Jats the Ancient Rulers में अनेक तर्क देकर सिद्ध किया है कि वे जाट थे। प्रो० बी.एस. ढिल्लों (कनाडावासी) ने भी अपने शोध History and study of the Jats में सिद्ध किया है कि ये जाट थे। इसके अतिरिक्त गुप्तराजाओं की राजव्यवस्था से स्वयं सिद्ध है कि वे जाट थे, क्योंकि ऐसी व्यवस्था जाटों को छोड़ किसी भी अन्य हिन्दूराज में नहीं थी। धार्मिक कट्टरता व असमानता कभी भी जाट राजाओं के शासन के अंग नहीं थे। सम्राट् हर्षवर्धन उस समय के जाटों के अन्तिम बौद्ध राजा थे, जिनके पूर्वज पंजाब के जालंधर क्षेत्र से आकर थानेश्वर में बसे। इनका वंश वैसाति था जो जाटों के बैंस गोत्र में परिवर्तित हुआ। इन्होंने ही 'सर्वखाप पंचायत' की नींव सन् 643 में रखी। जिसके इतिहास का समुचित रिकार्ड 7वीं सदी से लेकर आज तक का, स्वर्गीय चौ० कबूलसिंह गाँव शोरम जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के घर लगभग 40 किलो भार में जर-जर अवस्था में उपलब्ध है। जिसकी सहायता लेकर डा. एम.सी. प्रधान, डा. मोन फोर्ट, डा. जी.सी. द्विवेदी व डा. बालकृष्ण डबास आदि ने जाट विषयों पर पी-एच-डी की। इस रिकार्ड के आधार पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। [Yaudheya|प्राचीन यौधेय राज]] तो लगभग पूरे का पूरा ही जाटों का पंचायती राज रहा है। स्वामी ओमानन्द सरस्वती व वेदव्रत शास्त्री जी ने भी अपने ग्रंथ 'देशभक्तों के बलिदान' [[1]] में भी इसे सिद्ध किया है। माननीय विद्वान् डा. धर्मकीर्ति ने अपने शोध में सम्राट् कनिष्क से लेकर सम्राट् विजयनाग तक 17 राजाओं को बौद्धधर्मी जाट सिद्ध किया, जिसमें उनके शासनकाल तथा राजक्षेत्र का पूरा विवरण दिया है, बाकी इतिहासकारों को इन्हें जाट कहने में क्या शर्म है? इसी आधार पर भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय जाकीर हुसैन ने कहा था कि "भारतीय इतिहास जाट इतिहास है और जाट इतिहास ही भारतीय इतिहास है।" याद रहे जाट वीरों के पिताओं ने संसार में सबसे अधिक अपने जवान बेटों के दाह संस्कार किये हैं। शान्ति और युद्ध में यही अन्तर होता है कि शांति के समय बेटा बाप की अर्थी को कंधा देता है तो युद्ध के समय बाप बेटे की अर्थी को कंधा देता है।

- 12) नैना देवी मन्दिर उत्तर भारत में एक विख्यात पूजनीय व पवित्र स्थान माना जाता है। यह हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले के पहाड़ों में स्थापित है। चण्डीगढ़ से जब हम भाखड़ा बांध को जाते हैं तो दाहिनी ओर पहाड़ों पर यह भव्य मन्दिर चमकता नजर आता है। इस देवी की प्राचीन मूर्ति लगभग 4000 वर्ष पूर्व बेबीलोनिया के किसी मन्दिर में स्थापित थी। इसे नैना या नीना या नैनैन्ई भी कहा जाता है। बेबीलोनिया को हराकर इस देवी की मूर्ति को सूसा (ईरान में) ले जाया गया। जब 625 ई० पूर्व में बेनीपाल जाट सम्राट् ने सूसा को लूटा तो देवीमूर्ति को भी उरूक ले गया, जहां उसने इसे एक मन्दिर में स्थापित कर दिया। जब कुछ जाट इस्लाम के उदय के समय वापिस अपने प्राचीन देश भारत आये तो इस मूर्ति को भी अपने साथ लाए तथा इस पहाड़ी पर एक छोटा मन्दिर बनाकर स्थापित कर दिया जो आज भव्य मन्दिर है। इस पहाड़ की तलहटी में आज भी जाटों की अच्छी संख्या है।

- 13) पं० मदन मोहन मालवीय के नाम से हम सभी भारतीय परिचित हैं। ये महान् पुरुष एक राजनीतिक, समाज-सुधारक, शिक्षा सुधारक तथा धर्मप्रिय नेता थे। इन्होंने ही बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इन्होंने विख्यात सेठ बिड़ला के सहयोग से सन् 1932 में दिल्ली में एक भव्य मन्दिर बनवाने की सोची। इसकी आधारशिला के अवसर पर भारत वर्ष के राजा-महाराजाओं को पधारने का न्यौता दिया गया। काफी राजा महाराजा सज-धजकर इस अवसर पर दिल्ली पहुंचे। जब आधारशिला रखने की बारी आई तो महामहिम मालवीय जी दुविधा में पड़ गए कि किस राजा के कर-कमलों से इस पवित्र मन्दिर की स्थापना की

जाए। उन्होंने बहुत सोच विचार कर एक प्रस्ताव तैयार किया, जिसमें उन्होंने 6 शर्तें रखीं कि जो भी राजा इन शर्तों को पूरा करेगा वही इस मन्दिर की आधारशिला अर्थात् नींव का पत्थर रखेगा। ये शर्तों इस प्रकार थीं:-

- क) जिसका वंश उच्चकोटि का हो।
- ख) जिसका चरित्र आदर्श हो।
- ग) जो शराब व मांस का सेवन न करता हो।
- घ) जिसने एक से अधिक विवाह न किये हों।
- ङ) जिसके वंश ने मुगलों को अपनी लड़की न दी हो।
- च) जिसके दरबार में रण्डियां न नाचती हों।

इस प्रस्ताव को सुनकर राजाओं में सन्नाटा छा गया और जमीन कुरेदने लगे। जब बाकी राजा नीचे गर्दन किये बैठे थे तो धौलपुर नरेश महाराजा उदयभानु सिंह राणा अपने स्थान से उठे जो इन सभी 6 शर्तों पर खरे उतर रहे थे। इस पर पं० मदन मोहन मालवीय ने हर्ष ध्वनि से उनके नाम का उदघोष किया तो शोरम गांव जिला मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश के जाट पहलवान हरज्ञान ने 'नरेश धौलपुर जिन्दाबाद' के नारे लगाये । इस पर मालवीय साहब ने कहा, महाराजा धौलपुर भानुसिंह राणा धौलपुर नरेश हमारे देश की शान हैं। इसके बाद पूरी सभा नारों से गूंज उठी। क्योंकि इन सभी शर्तों को पूर्णतया पूरी करने वाले वही एकमात्र राजा थे जो वहां पधारे थे।

इस जाट नरेश का नाम मन्दिर के प्रांगण में स्थापित शिलालेख पर इस प्रकार अंकित है:-

- श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर - श्री महामना मालवीय पं० मदन मोहन मालवीय जी की प्रेरणा से मन्दिर की आधारशिला श्रीमान उदय भानुसिंह धौलपुर नरेश के कर कमलों द्वारा चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या रविवार विक्रमीय सम्वत् 1989 (अर्थात् सन् 1932) में स्थापित हुई।

जाट नरेश का नाम व चित्र मन्दिर के बाएं बगीचे में संगमरमर के एक पत्थर पर अंकित है। राजस्थान की पूर्व मुख्यमन्त्री श्रीमती वसुंधरा राजे इसी महाराजा उदयभानु राणा के राजकुमार से ब्याही थी जो बड़े गर्व से कहती हैं - "वह वीर जाटों की बहू है।"

(पुस्तक - 'भारत का इतिहास' - एक अध्ययन, 'जाट जाति प्रछन्न बौद्ध है', 'पंचायती इतिहास' तथा Jats - The Ancient Rulers, 'सिख इतिहास', 'जाट वीरों का इतिहास' तथा 'फ्रांस से कारगिल' आदि-आदि) ।

इसी गौरवशाली जाट इतिहास पर मा० जयप्रकाश दलाल, गांव घुसकानी जिला भिवानी हरयाणावी रागनी में इस प्रकार गाते हैं -

http://www.jatland.com/forums/media.php?do=details&mid=277

टेक:- झूठ नहीं थे जाट लुटेरे जो तारीख के पाठां मैं,

लूटण खातिर ताकत चाहिए जो थी बस जाटां मैं.....

सोमनाथ के मन्दिर का सब धरा ढका उघाड़ लेग्या,

मोहम्मद गजनी लूट मचा कै सारा सोदा पाड़ लेग्या ।

हीरे पन्ने कणी-मणी चन्दन के किवाड़ लेग्या,

सब सामान लाद के चाल्या सत्राह सौ ऊंट लिए,

कोए भी नां बोल सका सबके गोडे टूट लिए ।

रस्ते मैं सिंध के जाटां नै ज्यादातर धन लूट लिए ।

मोहम्मद गजनी आया था एक जाटां की आँटां मैं.....॥1॥

व्रज का योद्धा जाट गोकुला औरंगजेब नै मार दिया,

सीकरी का महल किला जाटां नै उजाड़ दिया।

ताजमहल मैं लूट मचाई सारा गुस्सा तार दिया,

राजाराम जाट नै लड़कै दिल्ली की गद्दी हिला दई।

औरंगजेब की मरोड़ तोड़ कै माटी के म्हां मिला दई।

कब्र खोद अकबर की हड्डी चिता बणा कै जला दई।

एक चूड़ामण नै मुगलां की लई खाल तार सांटां तैं....॥2॥

भरतपुर के सूरजमल को मुगलां नै धोखे तैं मारा,

उसका बेटा होया जवाहरसिंह लालकिले पै जा ललकारा।

लालकिला जीत लिया लूट लिया माल सारा।

धोखा पट्टी सीखी नहीं जंग में पछाड़ ल्याए,

मुगलां का सिंहासन जाट दिल्ली तैं उखाड़ ल्याए।

साथ मैं नजराना और किले के किवाड़ ल्याए,

देशभक्ति का खून बहै इन जाटां की गांठां मैं.....॥3॥

जाते-जाते सिकन्दर को करा भगोड़ा जाटां नैं,

मुगल और अंग्रेजों को नां बिल्कुल छोड़ा जाटां नैं।

कलानौर की बौर काढ़ दी कोला तोड़ा जाटां नैं,

जलालत की जिन्दगानी, नहीं गंवारा जाटां नैं।

जिसनै न्योंदा घाल्या राख्या नहीं उधारा जाटां नैं।

पृथ्वीराज का कातिल मोहम्मद गौरी मारा जाटां नैं।

कहै जयप्रकाश घुसकाणी के, थारै कमी नहीं ठाठां मैं.....॥4॥

इसी प्रकार चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क ने तो पूरा ही इतिहास गाया है। मा० हवासिंह (बेली) गांव धनाना जिला भिवानी ने भी ऐसी ही एक रागनी भेजी है। जाट इतिहास में ठाकुर देशराज कहते हैं -

"हरियाणा के बीच में एक गाँव धनाना,

सूही बांधें पागड़ी क्षत्रीपन का बाणा।

नासे नेजे भड़कते घुड़ियन का हिनियाना,.....

बापोड़ा मत जाणियो ये है गाँव धनाना।।

दिल्ली की कुतुब मीनार जाटों की यादगार

हमने तो इतिहास बनाया, लिखा नहीं । मिटाने वालों ने बहुत किया, पर मिटा नहीं॥

आज तक यही प्रचारित किया जाता रहा है कि दिल्ली की कुतुब मीनार कुतुबुदीन ऐबक ने बनाई थी जो सच्चाई के कहीं भी पास नहीं है। कुतुबुदीन ने अवश्य 1206 से 1210 तक दिल्ली पर शासन किया, लेकिन इस अवधि में जाटों ने कभी उसे चैन से नहीं बैठने दिया। दिपालपुर रियासत के राजा जाटवान (मलिक गठवाला गोत्री जाट) ने ऐबक को पूरे तीन साल तक नचाये रखा, जब तक वह महान् जाट योद्धा लड़ाई में शहीद नहीं हो गये। जाटों की सर्वखाप पंचायत की सेना ने ऐबक की सेना को वीर योद्धा विजय राव 'बालियान' की अगवाई में उत्तर प्रदेश के भाजु और भनेड़ा के जंगलों में पछाड़ा, दूसरी बार वीर यौद्धा भीमदेव राठी की कमान में बड़ौत के मैदान में पीटा, तीसरी बार वीर यौद्धा हरिराय राणा की

कमान में दिल्ली के पास टीकरी में भागने के लिए मजबूर किया। ऐबक को मीनार तो क्या अपने लिए महल व किला बनाने का समय तक जाटों ने नहीं दिया। इस मीनार को जाट सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य (विक्रमादित्य) के कुशल इंजीनियर वराहमिहिर के हाथों चौथी सदी के चौथे दशक में बनवाया था। यह मीनार दिलेराज जाट दिल्ली के राज्यपाल की देखरेख में बना था। ग्रह नक्षत्र विज्ञान के आधार पर बनाया गया। यह मीनार जब साल में दो बार दिन-रात बराबर होते हैं तो इसकी छाया धरती पर नहीं पड़ती, क्योंकि यह पांच अंश दक्षिण में झुकी हुई है। मुसलमानों व मुगलों का शासन आया तो इसे दिशासूचक मीनार समझकर इसे 'कुतुब मीनार' कहा गया क्योंकि अरबी भाषा में दिशासूचक को कुतुब कहते हैं। आज भी समुद्री जहाजों में दिशासूचक को कुतुब कहते हैं। इसी के पास लगा लोहे का स्तम्भ भी उसी समय का है। इसलिए इस मीनार का नाम 'धारण मिनार' या 'जौहिया मीनार' या 'जाट मीनार' होना चाहिए।

यदि लोग यह मीनार कुतुबुदीन ऐबक की बनवाई मानते हैं तो मैं दावे से लिख रहा हूं कि ऐबक भी जौहिया गोत्री जाट था। इसका प्रमाण पाकिस्तान की पुस्तक "Extract from Distt. And States Gazetteer of Punjab Pakistan" के Vol-II (खण्ड दो) Research Society of Pakistan University of Punjab Lahore में दिया गया है, जिसके 'मुलतान' अध्याय के पेज नं० 132 पर है। यह ग्रन्थ पाकिस्तान सरकार की संस्था Trust Property Board of Pakistan का है। इसका दूसरा संस्करण नवम्बर 1983 में छपवाया जिसके प्रिंटर अफजल-लाहौर हैं। इसी पुस्तक में वहां के जाटों के सभी गोत्र भी लिखे हुए हैं, जो लगभग सारे हमारे गोत्रों से मिलते हैं। इसी पुस्तक में लिखा है कि शेख जलाल दाहिमा गोत्री जाट ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया था। इसी गोत्र का सादूल खां जाट शाहजहां का प्रधानमन्त्री था। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शहीद बन्तासिंह भी इसी गोत्र के सिख जाट थे। इसलिए यह प्रमाणित तथ्य है कि यह मीनार जाटों ने ही बनवाई थी। (पुस्तक - 'सर्व खाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम' व 'भारतीय इतिहास का-एक अध्ययन', जाट इतिहास पुस्तक आदि-आदि)

दिल्ली है बहादुर जाटों की, बाकी कहानियाँ भाटों की

इन चिरागों को जलना है, हवा कैसी हो । फिर सूरज को निकलना है, घटा जैसी हो।

कहावत है "जिसने नहीं देखी दिल्ली वो कुत्ता न बिल्ली" गाँव वाले जाट तो आज तक दिल्ली को जाटों की बहू कहते आये हैं। अधिकतर इतिहासकार लिखते हैं कि दिल्ली तोमर राजपूतों ने बसाई, लेकिन तोमर इसका नाम दिल्ली क्यों रखते? जरूर तोमर नगर या तोमरवास रखते। यह भी एक कहावत प्रचलित है कि नौ दिल्ली, दस बादली, किला वजीराबाद अर्थात् नौ बार दिल्ली तथा दश बार बादली उजड़कर बस चुके हैं और इसी प्रकार वजीराबाद का किला उजड़ा था। अवश्य तोमर राजाओं ने दिल्ली पर शासन किया, लेकिन तोमर इसका नाम दिल्ली क्यों रखते? वास्तव में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध है कि ये तोमर राजा भी जाट थे।

इसका संक्षेप में इतिहास इस प्रकार है कि दिल्ली के अंतिम तोमर (तंवर) राजा अनंगपाल थे। इनसे 20 पीढ़ी पहले भी एक अनंगपाल तोमर राजा हुए थे। लेकिन बाद वाले इस 20वें अनंगपाल राजा का 1164 ई० में दिल्ली पर राज था। इनको कोई पुत्र न होने के कारण इन्होंने अपनी पुत्री के पुत्र (दयोहते) पृथ्वीराज को अपनी सुविधा के लिए अपने पास

रख लिया और एक दिन गंगास्नान के लिए चले गए। जब वापिस लौट कर आए तो पृथ्वीराज ने राज देने से मना कर दिया। इस पर तंवर और चौहान जाटों में आपस में युद्ध हुआ जिसमें चौहान जाट विजयी रहे। राजस्थान के चौहान जाट पहले से ही अपने को राजपूत (राजा के पुत्र) कहलाने लगे थे। इस प्रकार दिल्ली पर बाद में राजपूत चौहानों का राज कहलाया। लेकिन ऐसी कौन सी विपदा आई कि दिल्ली में जाट तो रह गए लेकिन राजपूत गायब हो गए? इससे यह प्रमाणित है कि जाट और राजपूत एक ही थे। यह सब काल्पनिक बृहत्यज्ञ का ही परिणाम है। इस प्रकार पृथ्वीराज बड़े धोखेबाज भी रहे। बाद में इन्हीं तंवरों में से एक सहारा नाम का प्रसिद्ध व्यक्ति हुआ जिससे जाटों का सहरावत गोत्र प्रचलित हुआ जिनके दिल्ली में आज 12 गांव हैं। याद रहे इतिहास से प्रमाणित है कि कुंतल, तंवर, सहरावत व डागर आदि जाट पांडवों के वंशज हैं। (पुस्तक - रावतों का इतिहास)

राजा अनंगपाल के सगे परिवार के लोग फिर मथुरा क्षेत्र में चले गए। इन्हीं लोगों ने सौख क्षेत्र की खुटेल पट्टी में महाराजा अनंगपाल की बड़ी मूर्ति स्थापित करवाई जो आज भी देखी जा सकती है। उसी समय इनके कुछ लोगों ने पलवल के पूर्व दक्षिण में (12 किलोमीटर) दिघेट गांव बसाया। आज इस गांव की आबादी 12000 के लगभग है। इन्हीं के पास बाद में चौहान जाटों ने मित्रोल और नौरंगाबाद गांव बसाए जिन्हें आज भी जाट कहा जाता है राजपूत नहीं।

दिल्ली का नाम तो दिलेराम उर्फ दिल्लू से बिगड़कर दिल्ली पड़ा। दिलेराम विक्रमादित्य के शासन काल में लगभग 21 वर्षों तक लगातार दिल्ली के राज्यपाल रहे, उन्होंने इसका प्रशासन इतना सुचारु रूप से चलाया कि जनता उनके नाम की ही कायल हो गई। इसी कारण विक्रमादित्य ने खुश होकर इस दिलेराम जाट को 'दिलराज' की उपाधि से नवाजा था। इनका गोत्र भी ढिल्लों था। याद रहे कभी भी कोई ढिल्लों गोत्री जाट मुस्लिम धर्मी नहीं बना। अधिकतर सिख बने, शेष हिन्दू जाट हैं। हरयाणा में भिवानी जिले के कई गांवों में इस गोत्र के हिन्दू जाट हैं। इसी दिलेराज को लोग इन्हें प्यार और इज्जत से दिल्लू कहने लगे, जिस कारण यह दिल्लू की दिल्ली कहलाई। यह तथ्यों से परिपूर्ण इतिहास सर्व खाप पंचायत के रिकार्ड में भी दर्ज है।

इसी दिल्ली पर जीवन जाट के वंशजों का राज 445 वर्ष रहा है। स्वामी दयानन्द जी ने भी सत्यार्थप्रकाश में जीवन के 16 वंशजों (पीढ़ी) का राज 445 वर्ष 4 महीने 3 दिन लिखा है। (पुस्तक - रावतों का इतिहास, सर्वखाप का राष्ट्रीय पराक्रम आदि-आदि)।

जाटों ने हूणों को भारत से भगाया

वे सोचे रहे थे तोप तमंचे हमें झुका देंगे । झुकने वाले नहीं थे कभी हम, सारा मोल चुका देंगे ।

चन्द्र व्याकरण में लिखा है अजयज्जट्टो हूणान् अर्थात् जाटों ने हूणों पर विजय पाई। छठी सदी में हूणों ने भारत पर ताबड़-तोड़ आक्रमण किये और पूरा भारत थर्रा उठा, जिनको हराने का श्रेय महाराजा यशोधर्मा वरिक को है, जो मालवा (मध्यप्रदेश) मन्दसौर के वरिक वंश के जाट राजा थे और आज भी जाटों का यही गोत्र प्रचलित है। वरिक गोत्र के सिख जाट अधिक हैं। हरयाणा के कैथल और करनाल के क्षेत्र में वरिक हिन्दू जाट भी हैं। इस नाम का गोत्र भारत में और कहीं भी प्रचलित नहीं है। यशोधर्मा के समय के तीन शिलालेख मन्दसौर से प्राप्त हो चुके हैं जिनमें स्पष्ट तौर पर इनका वंश

(गोत्र) लिखा है। इस क्षेत्र पर इन जाट नरेशों का शासन 340 ई0 से 540 ई० तक था, जिसमें बंधुवर्मा तथा विष्णुवर्धन आदि प्रमुख राजा हुये। इसी यशोधर्मा की पुत्री यशोमतीमहाराजा हर्षवर्धन बैंस की माता थी। यह सब भारतीय इतिहास में दर्ज है। इस लड़ाई का पूरा ब्यौरा सेनापतियों के नाम सहित जिसमें दूसरी सहयोगी जातियाँ भी सम्मिलित थी, पंचायती इतिहास रिकार्ड में भी अंकित है।

इसी प्रकार संवत् 1510 में तुर्क सेना को करनाल के मैदान में हराने वाला बाल ब्रह्मचारी 58 धड़ी वजनी सेनापति वीर योद्धा सूरजप्रकाश दहिया जाट था। इस युद्ध का भी पूरा ब्यौरा सर्वखाप पंचायत रिकार्ड में भी दर्ज है। भारतीय सरकारी इतिहासकारों को और क्या प्रमाण चाहिए, हम देंगे कि भारतवर्ष की भूमि को जाटों ने हूणों से बचाया था। (पुस्तक - 'सर्व खाप पंचायत का राष्ट्रीय पराक्रम', 'भारतीय इतिहास का एक अध्ययन', पंचायती इतिहास व जाट वीरों का इतिहास आदि-आदि)

जब जाटों ने अंग्रेजों का सूर्य उदय होने से रोक दिया

एक कहावत है कि 'अंग्रेजों के राज में उनका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था' यह सच है कि इनके अधीन जमीन पर हमेशा कहीं ना कहीं दिन रहता था। भारत के इतिहास में अंग्रेजों के विरुद्ध केवल प्लासी की लड़ाई का वर्णन किया जाता है जबकि यह लड़ाई पूरी कभी लड़ी ही नहीं गई, बीच में ही लेन-देन शुरू हो गया था। सन् 1857 के गदर का इतिहास तो पूरा ही मंगल पाण्डे, नाना साहिब, टीपू सुलतान, तात्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई के इर्द-गिर्द घुमाकर छोड़ दिया गया है, लेकिन जब जाटों का नाम आया और उनकी बहादुरी की बात आई तो इन साम्यवादी और ब्राह्मणवादी लेखकों की कलम की स्याही ही सूख गई। इससे पहले सन् 1805 में भरतपुर के महाराजा रणजीतसिंह (पुत्र महाराजा सूरजमल) की चार महीने तक अंग्रेजों के साथ जो लड़ाई चली वह अपने आप में जाटों की बहादुरी की मिशाल और भारतीय इतिहास का गौरवपूर्ण अध्याय है। भारत में अंग्रेजों का भरतपुर के जाट राजा के साथ समानता के आधार पर सन्धि करना एक ऐतिहासिक गौरवशाली दस्तावेज है जिसे 'Permanent Friendship Treaty on Equality Basis' नाम दिया गया। इस प्रकार की सन्धि अंग्रेजों ने भारतवर्ष में किसी भी राजा से नहीं की। (वास्तव में दूसरों के साथ सन्धि करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी क्योंकि हमारे बहादुर कहे जाने वाले राजाओं ने जाटों को छोड़ अंग्रेजों की बगैर किसी हथियार उठाये गुलामी स्वीकार कर ली थी।) इतिहास गवाह है कि भारत के अन्य किसी भी राजा ने अंग्रेजों के खिलाफ प्लासी युद्ध व मराठों के संघर्ष को छोड़कर अपनी तलवार म्यान से नहीं निकाली और बहादुरी की डींग हाकनेवालों ने नीची गर्दन करके अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार की। पंजाब में जब तक 'पंजाबकेसरी' महाराजा रणजीतसिंह जीवित थे (सन् 1839), अंग्रेजों ने कभी पंजाब की तरफ आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं की और सन् 1845 में उन्होंने पंजाब में प्रवेश किया, वह भी लड़ाई लड़कर। अंग्रेज इन लड़ाइयों के अन्त में विजयी रहे लेकिन कुछ हिन्दुओं की महान् गद्दारी की वजह से (आगे पढें)। भरतपुर की लड़ाई पर एक दोहा प्रचलित था -

हुई मसल मशहूर विश्व में, आठ फिरंगी नौ गोरे।

लड़ें किले की दीवारों पर, खड़े जाट के दो छोरे।

इस लड़ाई का विवरण अनेक पुस्तकों में लिखा मिलता है, जैसे कि 'भारत में अंग्रेजी राज' 'जाटों के जोहर' और 'भारतवर्ष में अंग्रेजी राज के 200 वर्ष।' लेकिन विद्वान् सवाराम सरदेसाई की पुस्तक "अजय भरतपुर" प्रमुख है। विद्वान् आचार्य गोपालप्रसाद ने तो यह पूरा इतिहास पद्यरूप में गाया है जिसका प्रारंभ इस प्रकार है -

अड़ कुटिल कुलिस-सा प्रबल प्रखर अंग्रेजों की छाती में गढ़,

सर-गढ़ से बढ़-चढ़ सुदृढ़, यह अजय भरतपुर लोहगढ़।

यह दुर्ग भरतपुर अजय खड़ा भारत माँ का अभिमान लिए,

बलिवेदी पर बलिदान लिए, शूरों की सच्ची शान लिए ॥

जब राजस्थान के राजपूत राजाओं ने अंग्रेजों के विरोध में तलवार नहीं उठाई तो जोधपुर के राजकवि बांकीदास से नहीं रहा गया और उन्होंने ऐसे गाया -

पूरा जोधड़, उदैपुर, जैपुर, पहूँ थारा खूटा परियाणा।

कायरता से गई आवसी नहीं बाकें आसल किया बखाणा ॥

बजियाँ भलो भरतपुर वालो, गाजै गरज धरज नभ भौम।

पैलां सिर साहब रो पड़ियो, भड उभै नह दीन्हीं भौम ॥

अर्थ है कि "है जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के मालिको ! तुम्हारा तो वंश ही खत्म हो गया। कायरता से गई भूमि कभी वापिस नहीं आएगी, बांकीदास ने यह सच्चाई वर्णन की है। भरतपुर वाला जाट तो खूब लड़ा। तोपें गरजीं, जिनकी धूम आकाश और पृथ्वी पर छाई। अंग्रेज का सिर काट डाला, लेकिन खड़े-खड़े अपनी भूमि नहीं दी।"

अंग्रेजों ने स्वयं अपने लेखों में भरतपुर लड़ाई पर जाटों की बहादुरी पर अनेक टिप्पणियाँ लिखीं। जनरल लेक ने वेलेजली (इंग्लैंड) को 7 मार्च 1805 को पत्र लिखा "मैं चाहता हूँ कि भरतपुर का युद्ध बंद कर दिया जाये, इस युद्ध को मामूली समझने में हमने भारी भूल की है।" इस कारण भरतपुर का लोहगढ़ का किला अजयगढ़ कहलाया। उस समय कहावत चली थी लेडी अंग्रेजन रोवें कलकत्ते में क्योंकि अंग्रेज भरतपुर की लड़ाई में मर रहे थे, लेकिन उनके परिवार राजधानी कलकत्ता में रो रहे थे। इतिहास गवाह है कि जाटों ने चार महीने तक अंग्रेजों के आंसुओं का पानी कलकत्ता की हुगली नदी के पानी में मिला दिया था। स्वयं राजस्थान इतिहास के रचयिता कर्नल टाड ने लिखा - अंग्रेज लड़ाई में जाटों को कभी नहीं जीत पाए।

इस प्रकार अंग्रेजों का सूर्य जो भारत में बंगाल से उदय हो चुका था भरतपुर, आगरा व मथुरा में उदय होने के लिए चार महीने इंतजार करता रहा, फिर भी इसकी किरणें पंजाब में 41 साल बाद पहुंच पाईं। पाठकों को याद दिला दें कि भारतवर्ष में केवल जाटों की दो रियासतों भरतपुर व धौलपुर ने कभी भी अंग्रेजों को खिराज (टैक्स) नहीं दिया। यह भी ऐतिहासिक तथ्य है कि भरतपुर में लौहगढ़ का किला भारत में एकमात्र ऐसा गढ़ है जिसे कभी कोई दूसरा कब्जा नहीं कर पाया। इसलिए इसका नाम अजयगढ़ पड़ा। भरतपुर के महाराजा कृष्णसिंह ने भारतवर्ष में भरतपुर शहर में सबसे

पहले नगरपालिका की स्थापना की थी। अंग्रेजों ने मद्रास, कलकता व बम्बई में सबसे पहले मुनिस्पल कार्पोरेशन की स्थापना की। इसी जाट राजा कृष्ण सिंह ने भरतपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन करवाया जिसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर भी पधारे थे। सन् 1925 में राजा जी ने पुष्कर (राजस्थान) में जाट महासम्मेलन करवाया जहां चौ० छोटूराम जी भी पधारे थे। इन्होंने जनता के लिए 'भारत वीर' नाम का पत्र प्रकाशित करवाया था। (यह सभी तथ्य ऊपरलिखित पुस्तकों में हैं जिन्हें डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक 'जाटों का नया इतिहास' में इन्हें संजोया है।)

इस्लाम धर्म के पैगैम्बर हजरत मुहम्मद की जाटों ने की रक्षा, ईसाई धर्म का किया सुधार, सिक्ख धर्म के रहे ताबेदार और हिन्दू (ब्राह्मण) धर्म ने किया बेकार

महात्मा बुद्ध ने जहाँ, धम्म का राग गाया।

मसीह ने जहाँ-जहाँ प्यार का पैगाम पहुंचाया।

चिश्ती ने जिस चमन को अपना बतलाया।

नानक ने जिस जमीं पर वहदत का गीत गाया।

जाट का वतन वही है, जाट का वतन वही है ॥

इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है कि सातवीं सदी तक जाट बौद्धधर्मी थे, क्योंकि उनके राजा भी बौद्धधर्मी थे। यह एक शोध का विषय हो सकता है कि स्वयं महात्मा बुद्ध जाट जाति में पैदा हुए तथा भारतीय इतिहास लिखता है कि वे क्षत्रिय वंश के शाक्य-गोत्री थे। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी भी जाट क्षत्रिय जाति से थे। इसीलिए इन इतिहासकारों का कर्तव्य बनता है कि वे सिद्ध करें कि वे किस जाति के थे? हालांकि 'जाट वीरों का इतिहास' के लेखक कैप्टन दलीपसिंह अहलावत ने अपने ग्रन्थ में इन्हें जाट जाति का सिद्ध किया है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि बौद्ध जाटों ने इस धर्म को संसार में फैलाया, जो आज लगभग 28 देशों में यह धर्म स्थापित है। लेकिन आज यह धर्म अपनी ही जन्मभूमि पर दम तोड़ रहा है। आज लोग इस बात से बड़े खफा हैं कि मुसलमानों ने हिन्दुओं के मन्दिरों को क्यों तोड़ा। क्या मैं कट्टरवादी हिन्दुओं से पूछ सकता हूँ कि उन बौद्धधर्मी जाटों के मठ किसने तोड़े? यह बड़ा लम्बा इतिहास है कि यह धर्म ब्राह्मणवाद का किस प्रकार शिकार हुआ। लेकिन संक्षेप में यह बतलाना आवश्यक है कि कई इतिहासकारों ने 'हदीस' के हवाले से लिखा है कि जब हजरत मुहम्मद करबला से मक्का लौटने लगे तो उन्होंने अपनी सुरक्षा की मदद जाटों से ली थी तथा करबला के खजाने की जिम्मेवारी जाटों के सहारे छोड़ी थी। इमाम बुखारी ने अपनी पुस्तक 'किताबल अदबुल मुफरद' में लिखा है कि जब पैगम्बर साहब की दूसरी बेगम आयशा बीमार पड़ी तो उसका इलाज एक जाट चिकित्सक ने किया था। पैगम्बर साहब ने अरब की रक्षा के लिए जाटों को 'अन्तकिया' क्षेत्र में बसाया था। अरब में जाटों को 'जट्ट या जत' नाम से पुकारा जाता है। 'Rise of Islam' अंग्रेजी की पुस्तक में यूरोपियन इतिहासकार मण्डली लिखती है कि दसवीं सदी में अरब व मध्य एशिया में ईसाई धर्म के प्रचारक पोप अपने प्रचार में लगे थे, लेकिन ये भ्रष्टाचारी हो गये थे, जिस कारण जाटों ने इन्हें वापिस यूरोप में धकेल दिया। बौद्ध ग्रन्थ 'अभियान जातक' में जाटों के समुद्री बेड़े का विस्तार से वर्णन मिलता है। मध्य एशिया में सबसे पहले इस्लाम धर्म अपनाने वाला

जाट राजा गजन खान था जो एक बौद्ध नाम था। यही खान शब्द इस्लाम में लोकप्रिय बना जिसने पठानों को बड़ी शौहरत दिलवाई। इस इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी Jats - The Ancient Rulers में भी दी गई है।

मैंने स्वयं 31 अक्तूबर 1990 को प्रातः देखा जब बाबरी मस्जिद को तोड़ने गये हजारों लोगों को अयोध्या के सरयू नदी के पुल से गिरफ्तार किया गया तो उनमें हरियाणा और उत्तर प्रदेश के जाट क्षेत्र से हरियाणवी बोलने वाले लड़के भी थे। जाट तो शिवालय, बौद्ध मठ, मस्जिद, गिरजाघर व गुरुद्वारे आदि बनाने वाले थे, तोड़ने वाले कैसे हो गये? जाटों को नहीं भूलना चाहिए कि आज जो कट्टर हिन्दूपंथी मस्जिदों को तोड़ने की बात कर रहे हैं उन्हीं के पूर्वजों ने कभी मन्दिरों को लुटवाया और तुड़वाया था। गजनी व बाबर के सेनापति को रेमीदास और तिलक इन्हीं के पूर्वज थे।

पाठकों की जानकारी के लिए बाबरी मस्जिद की सच्चाई बतलाना आवश्यक है जो इस प्रकार है -

राम जन्मभूमि उर्फ बाबरी मस्जिद विवाद भारत वर्ष की एकता पर प्रश्न चिह्न है। इस विवाद के कारण भारतवर्ष की राजनीति ने सन् 1990 से एक नया मोड़ लिया, जिसके कारण भारत की गम्भीर समस्याएं गौण हो गईं। यह विवादित बाबरी मस्जिद उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में सरयू नदी के साथ बसी मन्दिरों की नगरी अयोध्या में थी। इसको तोड़ने का पहला राजनीतिक प्रयास 31 अक्तूबर 1990 को हुआ। जिसमें दो लोगों की जानें गईं। दूसरा प्रयास 2 नवम्बर 1990 को हुआ जिसमें इसी नगरी की मनीराम छावनी के पास 9 लोगों की जानें गईं तथा 34 लोग घायल हुए। इन घटनाओं ने देश के राजनैतिक व धार्मिक उफान को सातवें आसमान पर पहुंचा दिया जिसका पटाक्षेप 6 दिसम्बर 1992 को इस मस्जिद को गिराये जाने पर हुआ। जिसके परिणामस्वरूप भारत के हिन्दू व मुसलमानों के मजहबी संगठन और भी कट्टरपंथी हो गए और मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं पर गहरा आघात पहुंचा। इसके परिणामस्वरूप उनकी सोच में बड़ा परिवर्तन आया। नतीजतन पहली बार देश ही के कुछ मुसलमानों ने मिलकर 23 मार्च 1993 को मुम्बई में बड़े पैमाने पर बम विस्फोट किए, जिसमें 296 आम भारतीय नागरिकों (सभी धर्मों के) की जानें गईं। इसी धार्मिक उन्माद के कारण देश में पहली बार केन्द्र में तथा कुछ राज्यों में भारतीय जनता पार्टी पर आधारित सरकारें बनी, इसी उन्माद के कारण देश में जगह-जगह सीमा पार से (जम्मू क्षेत्र के अतिरिक्त भी) जेहादी हमलों में भारतीय मुसलमान सम्मिलित पाए गए। जबकि पंजाब का उग्रवाद जिसमें पाकिस्तानी आई.एस.आई. का एक बहुत बड़ा हाथ था, सन् 1980 से लेकर 1991 तक कोई एक भी हिन्दुस्तानी मुसलमान कभी भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्मिलित नहीं पाया गया। अर्थात् बाबरी मस्जिद के गिराये जाने से देश में अदृश्य अलगाववाद की नींव पड़ी। कहने का अर्थ है कि देश में सन् 1990 के बाद राजनैतिक परिवर्तन तथा जेहादी हमलों का एक बड़ा कारण बाबरी मस्जिद का गिराया जाना है। लेकिन वास्तव में बाबरी मस्जिद क्या थी, इसका सच क्या है?

इस मस्जिद की नींव इब्राहिम लोधी ने 17 सितम्बर 1523 (930 हिजरी) को अयोध्या में एक खाली पड़ी जमीन पर रखी जो 10 सितम्बर 1524 को बनकर तैयार हुई। इसका पत्थर (शिलालेख) भी इब्राहिम लोधी के नाम से लगाया गया था। यह मस्जिद लगभग 25 फुट लम्बी तथा 12 फुट चौड़ी, 3 दरवाजे तथा तीन गुम्बदों वाली बगैर मीनार की एक बहुत ही साधारण निर्मित मस्जिद थी। इब्राहिम लोधी अवश्य ही एक मुस्लिम धर्मी था लेकिन उसकी दादी हिन्दू धर्म की थी जिसका खून लोधी की रगों में बहता था। उसने भारत में कभी किसी मन्दिर को नहीं तुड़वाया। उस समय तक बाबर व तुलसीदास नाम का कोई भी व्यक्ति भारत में नहीं था।

लगभग सन् 1524 में बाबर नाम के व्यक्ति ने बुखारा व फरगना की अपनी सल्तनत लड़ाई में खो दी थी और अपनी नई सल्तनत बनाने के लिए भारत पर हमला किया। जिसका मुकाबला इब्राहिम लोधी ने पानीपत के मैदान में किया, जिसमें 20 अप्रैल 1526 को विजय बाबर के हाथ लगी जिसके नाम का खुतबा मौलाना महमूद और शेख जैन ने 27 अप्रैल 1526 को पढ़ा। आगरा को अपनी राजधानी बनाया और मीरबाकी को अवध का अपना सूबेदार बनाया। यही अवध बाद में अयोध्या कहलाई और घाघरा नदी सरयू नदी कहलाई। इसी मीरबाकी के वंशज आज भी वहां के सनेहुआ गांव में रहते हैं, जो कभी इस मस्जिद में नमाज अदा करते थे। जो इस पूरी सच्चाई को जानते हैं लेकिन उनकी कोई सुने भी तो?

सन् 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की सबसे बड़ी उपलब्धि थी -भारतीय हिन्दू व मुसलमानों की एकता। जिसमें भारतीयों ने बादशाह बहादुरशाह जफर को अपना नेता चुना था। इस एकता पर अंग्रेज भयभीत हो गए थे। इसी कारण अंग्रेजों ने बांटो और राज करो की नीति अपनाई थी। हिन्दू और मुसलमानों में फूट डालने के लिए अंग्रेजों ने कई षड्यन्त्रों से अपनी नीति को अंजाम दिया था जिसमें इब्राहिम लोधी की इस मस्जिद को बाबरी मस्जिद घोषित किया गया। सन् 1889 में आर्कियालॉजीकल सर्वे आफ इण्डिया के डायरेक्टर अंग्रेज ए० फ्यूहरर को यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी कि वह इस मस्जिद से इब्राहिम लोधी के नाम के शिलालेख को मिटवा दे तथा अंग्रेज गजेटियर लेखक एच.आर. नेविल से फैजाबाद गजेटियर में लिखवाया कि बाबर ने सन् 1528 की गर्मियों में अयोध्या में प्राचीन राममन्दिर को मिसमार करके वहां मस्जिद तामीर करवाई जहां 174000 हिन्दू मारे गए। इस षड्यन्त्र को प्रमाणित करने के लिए बाबरनामा के साढ़े पांच महीने अर्थात् 3 अप्रैल 1528 से 17 सितम्बर 1528 तक के दिनों के पन्ने गायब करवा दिये गए। लेकिन कहते हैं कि चोर कितनी भी होशियारी क्यों न करे फिर प्रमाण सूत्र अवश्य छोड़ जाता है। इसी प्रकार फ्यूहरर साहब अपनी आर्कियालॉजीकल सर्वे आफ इण्डिया की फाइलों को जलाना भूल गए, जिसमें यह सच्चाई अंकित है। इस षड्यन्त्र का दूसरा प्रमाण यह है कि सन् 1869 में फैजाबाद-अयोध्या की कुल आबादी 9949 थी जो 12 वर्षों में सन् 1881 में 11643 हो गई अर्थात् कुल 2000 आबादी बढ़ी तो फिर सन् 1528 में 174000 हिन्दू कहां से आ गए थे? तीसरा प्रमाण है कि यदि बाबर को मन्दिर ही तोड़ना था तो हिन्दुओं का एक और भगवान श्रीकृष्ण जी का मन्दिर मथुरा में जो उसकी राजधानी आगरा से मात्र 50 किलोमीटर की दूरी पर है, को अवश्य तोड़ता।

बनारस के विश्वनाथ मन्दिर की कहानी तो बड़ी ही शर्मनाक है। औरंगजेब का शासन था। कच्छ की रानी इस मन्दिर में अपने दलबल के साथ विश्वनाथ भगवान के दर्शन करने आई थी। मन्दिर का पण्डा रानी को भगवान के साक्षात् दर्शन के बहाने मन्दिर के गर्भ गृह में ले गया और उसके साथ बलात्कार किया। वस्त्राभूषण विहीन भयभीत रानी तहखाने से बरामद हुई। इस घटना पर बड़ा बवाल मचा। इतिफाक से औरंगजेब उस समय गंगास्थान में ही था। उसे पण्डों की यह काली करतूत ज्ञात हुई तो वह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने कहा 'जहां बलात्कार हो वहां भगवान का घर नहीं हो सकता।' उसने इस मन्दिर को तोड़ने का आदेश दे दिया जिस पर रानी को बड़ा दुख हुआ और उसने बादशाह को संदेश भिजवाया कि इसमें मन्दिर का क्या दोष है? दोष तो पण्डों का है। इसी कारण उस स्थान पर औरंगजेब ने मस्जिद बनवा दी जिसे 'बनारस फरमान' के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार औरंगजेब ने रानी की बात भी रख ली।

आज अयोध्या, बनारस तथा मथुरा के इन मन्दिर-मस्जिदों की सुरक्षा पर भारतीय जनता का सालाना करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? इन्हीं कारणों से बढ़े धार्मिक उन्माद से देश का बड़ा भारी नुकसान हुआ और हो रहा है। इस उन्माद के कारण ही मुम्बई में विस्फोट हुए, गुजरात में नरसंहार हुआ तथा देश के अन्य हिस्सों में जैहादी हमले जारी हैं। इसी उन्माद की आड़ में सरकारें बनती रही हैं। मुम्बई विस्फोट करने वाले (सन् 1993)

अपराधियों को सजा सुनाई जा चुकी है, लेकिन इब्राहिम लोधी की मस्जिद को तोड़ने वाले इसे बाबरी मस्जिद कहकर आज भी खुले घूम रहे हैं जो देश की एकता पर प्रश्न चिह्न है, यही इसकी सच्चाई है। भारत सरकार ने इस पर लिब्राहन आयोग बिठाया जिसने अपनी रिपोर्ट 16 मार्च सन् 1993 को देनी थी लेकिन इसकी अवधि 48 बार बढ़ानी पड़ी और लगभग 8 करोड़ रुपये खर्च होने पर आयोग ने अपनी रिपोर्ट जून 2009 में सरकार को सौंपी लेकिन प्रतीत होता है कि इस आयोग की रिपोर्ट का भी वही हाल होगा जो पहले से होता आया है। कुछ सालों से 'हिन्दुत्व' शब्द को बड़ा उछाला जा रहा है। हिन्दूत्व कुछ नहीं, केवल ब्राह्मणवाद का दूसरा रूप है। जाट कौम को इस छलावे में नहीं आना चाहिए। इस विषय की पूरी जानकारी के लिए मेरी आगामी पुस्तक अयोध्या में योद्धा को अवश्य पढ़ें ।

कच्छ की रानी का बलात्कार पहला ऐतिहासिक बलात्कार नहीं था। पौराणिक देवता इन्द्र ने ऋषि गौतम की पत्नी अहिल्या जो कि अपूर्व सुंदरी थी, पर आसक्त होकर गौतम का भेष धारण करके चन्द्रमा को साथ लिया और बलात्कार किया जो कि पहला ऐतिहासिक बलात्कार था। सिन्धु सभ्यता में ब्रह्मा ने अपनी पुत्री शतरूपा सरस्वती का आसक्त होकर बलात्कार किया यह दूसरा ऐतिहासिक बलात्कार था। सूर्य ने अपने भाई विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा को अपनी पत्नी बनाकर बलात्कार किया, यह तीसरा ऐतिहासिक बलात्कार था। देवताओं की गुरुपत्नी तारा का चन्द्र ने अपहरण किया और बलात्कार किया। यह चौथा ऐतिहासिक बलात्कार तथा प्रथम ऐतिहासिक अपहरण था। शान्तनु की दूसरी पत्नी सत्यवती ने भी विवाह से पूर्व पाराशर ऋषि से सहवास किया और वेदव्यास का जन्म हुआ जो ऋषि बन गए।

विषय की बात तो यह है कि इस बाबरी मस्जिद घटना के बाद हिन्दुओं व मुसलमानों के अनेक धार्मिक उन्मादी गुट पैदा हो गए और अधिक कट्टर होते चले गए। यह क्रिया अभी तक जारी है। जाटों को याद रखना होगा कि वे हिन्दू भी हैं, तो मुसलमान, सिख, ईसाई और बौद्ध भी हैं। आर्यसमाजी हैं तो राधास्वामी व निरंकारी भी हैं। इस बात को जो जाट नहीं समझ पाएगा वह जाट कहलाने का अधिकारी भी नहीं है। कट्टर धार्मिक संगठनों से दूर रहने वाला ही वास्तव में सच्चे अर्थों में सच्चा जाट है। मैं पाठकों को याद दिला दूं कि विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष अशोक सिंघल का खानदान जैनी था, तो जिन्हा का खानदान लाला हिन्दू, शेख अब्दुल्ला व इकबाल के पूर्वज ब्राह्मण हिन्दू थे । यह नहीं भूलना चाहिए कि जब टीपू सुलतान के शासनकाल में ब्राह्मण मराठों ने उसके राजक्षेत्र पर आक्रमण किया तो हिन्दुओं के प्रसिद्ध मन्दिर श्री रंगापट्ट को लूटा और तोड़ा था। पाटलीपुत्र के हिन्दू शासक ने बुद्ध के बोधिवृक्ष को कटवा डाला था।

खुदाई में खलल होता अगर दो खुदा होते।

हजार सिजदे करो, बुत कभी खुदा नहीं होते ॥

(पुस्तक-साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत 'कितने पाकिस्तान' लेखक कमलेश्वर, 'फैदर्स एण्ड स्टोन' लेखक कांग्रेसी नेता पट्टाभिसीतारमैय्या, तथा 'स्वदेशी और साम्राज्यवाद' लेखक डा. धर्मचन्द्र विद्यालंकार)।

जाटों ने ईसाई धर्म को यूरोप में ही समेट दिया था लेकिन इस्लाम धर्म में आपसी फूट और मारकाट की वजह से यूरोप में जाटों ने इस्लाम धर्म छोड़कर 16वीं सदी में ईसाई धर्म अपनाया। यूरोप में जाटों को छोटे जाट तथा बड़े जाट के नामों से ही जाना गया। जो जाट पहले गये वे छोटे-छोटे दलों में गये जैसे कि तूड़, बल, खोखर व बैंस आदि-आदि। इन्हें छोटे जाट कहा गया। बाद में मौर जाटों आदि की अगवाई में जो जाट बड़े दलों में गये उन्हें बड़ा जाट कहा गया। Rise of Christianity में यूरोपियन लेखकों का हिन्दी अनुवाद संक्षप में इस प्रकार है यूरोप तथा इटली की संस्कृति पूर्णतया मोर जाटों की देन है। गणित में शून्य का प्रयोग जाट ही अरब से यूरोप लाये थे। मौर जाट स्थानीय लोगों से अधिक

cultured (सभ्य) थे, जिन्होंने खेती के नये तरीके अपनाकर इन राज्यों को धनाढ्य बना दिया। यही इसका सार है। भारतीय इतिहासकार शिवदास गुप्ता जी का कथन है - "जाटों ने तिब्बत, यूनान, अरब, ईरान, तुर्कीस्तान, जर्मनी, साईबेरिया, स्कैण्डिनोविया, इग्लैंड, ग्रीक, रोम व मिश्र आदि में कुशलता, दृढ़ता और साहस के साथ राज किया और वहाँ की भूमि को विकासवादी उत्पादन के योग्य बनाया था।" (प्राचीन भारत के उपनिवेश पत्रिका अंक 4.5 1976)। स्वयं स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि आर्य लोग भारत से मिश्र, यूनान, रोम, यूरोप होते हुए अमेरिका पहुंचे थे तो जाटों को छोड़ यह आर्य फिर कौन थे? जाटों का तो स्वयं एक आर्य गोत्र भी है।

इन मोर जाटों ने 300 ई० पू० से लेकर 15वीं शताब्दी तक लगभग 1800 साल तक भारत, मध्य एशिया तथा यूरोप पर कहीं ना कहीं अपना परचम हमेशा लहराये रखा। यही यूरोपियन इतिहासकार आगे लिखते हैं "मोर जाटों ने 16वीं सदी में यूरोप में कैथोलिक ईसाई धर्म अपनाया और चर्च के नियमों में जितने भी सुधार हुए वे इन्हीं जाटों की देन हैं।" इससे पहले यहाँ ईसाई धर्म में विधवा औरत को पुनः विवाह का अधिकार नहीं था जो इनके आने पर ही हुआ।'' रोम वासियों के युद्ध के देवता के वाहन का नाम मोर पक्षी लिखा गया है। जबकि रोम में कभी मोर पक्षी था ही नहीं। यह वास्तव में भारत से जाने वाले ही जाट लोग थे जिनका गोत्र भी मौर्य था।

जाट यूरोप में प्राचीन समय में गये। इसके तीन ही उदाहरण देने पर्याप्त होंगे -

- **1. जब सन् 1983 में चौ. बलराम जाखड़ भारतीय संसद के अध्यक्ष के बतौर इंग्लैंड गये और वहाँ के संसद अध्यक्ष डा. बर्नार्ड वैदर हिल से मिले जो इन्हीं की तरह लम्बे-तगड़े थे, वे इनको देखते ही तड़ाक से बोले कि 'आप जाट हैं?' इस पर चौ० बलराम जाखड़ ने जब हामी भरी तो उन्होंने कहा 'कि वे भी जाट हैं और शाकाहारी हैं।' यह था दो जाटवंशजों का हजारों साल बाद सात समुद्र पार मिलन। यह खबर 'दैनिक हिन्दुस्तान' में दिनांक 12.07.1983 में विस्तार से छपी थी।**

- **2. दूसरा उदाहरण देखिए कि रोमानिया देश के संसद अध्यक्ष ने सन् 1993 में भारत भ्रमण के दौरान भोपाल में बयान दिया कि 'उनके पूर्वज भारत में पंजाब व इसके आसपास के किसी क्षेत्र के रहनेवाले जाट या राजपूत थे (राजपूतों को पौराणिक ब्राह्मणवाद की वजह से भारत से बाहर जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी- लेखक।)' यह खबर 'इंडियन एक्सप्रेस' के 30 दिसम्बर 1993 के अंक में विस्तार से छपी थी।**

- **3. तीसरा Published on January 11, 1980 - The New York Times.**

  The Origin of the Gypsies - There appears to be very reason for believing with Capt. Richard Burton that the Jats of North-Western India furnished so large a proportions of the emigrants or exiles who from the tenth century, went out of India westward, that there is risk assuming it as an hypothesis, at least that they formed the Haupotstamm of the gypsies of Europe.....they dealt in horses were naturally familiar with them.....their women were fortune tellers, specially by chiroancy.....in several European countries they long monopolised them. Even they were master of agriculture. They had shown great skill of dancers, musicians, singers, acrobats and it is a rule almost without exception that there is hardly a Travelling Company of such perrformances..... their hair remains black to advanced age and retain longer than European. They speak Aryan tongue which agress in the main with that of Jats.....this was bold race of North Western India, which at one time had such power as to obtain important victories over caliphs. They were broken and dispersed in eleventh century.

अर्थात् यह विस्तृत रिपोर्ट अमेरिका के प्रसिद्ध अखबार 'न्यूयार्क टाइम्स' के 11 जनवरी 1880 के अंक में छपी थी, जिसमे लगभग ग्यारहवीं सदी से जो जाट यूरोप में गए उन्हें जिप्सी कहा गया। इसका संक्षेप में अर्थ है कि 'यूरोप में पाए जाने वाले जिप्सी जाति के लोग भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र से दसवीं सदी में गए। जाट लोग स्वाभाविक तौर पर घोड़ों से जुड़े थे। इनकी औरतें भाग्यवादी कहानियां सुनाने में माहिर थी। वास्तव में ये लोग खेती-बाड़ी के मास्टर थे। इनके काले बाल लम्बी आयु तक रहते हैं और ये आर्यन जुबान बोलते हैं। ये भारत के उत्तर पश्चिम में रहने वाली दबंग जाट जाति से सम्बन्ध रखते हैं जिन्होंने एक समय खलीफों को भी हरा दिया था।'

यह लेख सिद्ध करता है कि ग्यारहवीं सदी तक जाट दलों के रूप में यूरोप जाते रहे हैं और बाद में जाने वाले जाटों को जिप्सी के नाम से जाना जाता है। किसी पाठक ने इस पर एतराज उठाया कि जाट जिप्सी नहीं हो सकते क्योंकि जाट जहां भी गए, खेती बाड़ी का धंधा अपनाया। पाठक का विचार उचित हो सकता है लेकिन हमारे देश में ही प्राचीन में कई जाटों ने खेती न अपनाकर दूसरा धंधा अपनाया जिस कारण वे दूसरी जातियों में सम्मिलित होते चले गए। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं।

सन् 1998 में चौ० सोमपाल शास्त्री जी जब भारत सरकार के कृषि राज्यमन्त्री थे तो सरकारी कार्य से ईराक में गये थे। उस समय उनकी एक घण्टा और 20 मिनट ईराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन से वार्तालाप हुई। जिसमें उनके पूछने पर शास्त्री जी ने अपने को जाट बतलाया तो सद्दाम हुसैन ने कहा, "जाट तो एक मार्शल कौम है और वे भी एक मार्शल कौम से हैं तथा हमारा मूल वंश एक ही है।"

यहां एक हैरान करने वाली घटना का भी संक्षेप में वर्णन किया जाता है कि जब अंग्रेज भारत आए तो भारत में आने वाला पहला अंग्रेज डॉ० थॉमस मोर ईसाई जाट था जो भारत में भ्रमण के लिए आया था। यह लगभग सन् 1600 की घटना है। बादशाह जहांगीर की बेगम बीमार थी। डॉ० मोर साहब को पता चला तो वह दरबार में पेश हुआ और बादशाह से बेगम के इलाज की आज्ञा मांगी। आज्ञा मिलने पर उसने बेगम को जल्दी ठीक कर दिया जिस पर बादशाह ने इलाज के बदले इनाम मांगने को कहा तो डॉ० मोर ने अपने निजी लाभ व स्वार्थ को छोड़कर अपने देशहित में अपने देश ब्रिटेन से भारत में स्वतन्त्र व्यापार की आज्ञा मांगी जिससे खुश होकर बादशाह ने 'शाही फरमान' जारी किया और ब्रिटेन से कर मुक्त व्यापार आरम्भ हुआ। डॉ० मोर चाहता तो करोड़ों रुपया मांग सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। यह था जाट का चरित्र। (पुस्तक - किसान विद्रोह और संघर्ष)

एक और अंग्रेज लेखक थॉमस मोर ने अपनी पुस्तक में अपने को मौर गोत्र का जाट माना हैं, तो जर्मन विद्वान् लेखक थॉमस मान ने अपने को मान गोत्री जाट माना है । डॉ० रिसले ने मिश्र के नेता गमल अब्दुल नाशर को निशर गोत्र का जाट कहा, वे अन्त में लिखते हैं - 'When a Jat runs wild it needs God to hold him back. अर्थात् जब एक जाट बिगड़ जाए तो उसे भगवान ही संभाल सकता है।

भारतीय फौज में अंग्रेज अफसर सर ले० जनरल जेम्स उट्रम (जाट)हुक्के के पियक्कड़ और उसके जबरदस्त फैन थे, जो यात्रा के दौरान भी हमेशा अपनी जीप में हुक्का रखते थे। (पुस्तक - वीरभोग्या वसुन्धरा तथा फौजियों की जबानी)। इसी प्रकार 139 जाट गोत्रों का मध्य एशिया व यूरोप में पाये जाने का पूरा विवरण डॉ. बी.एस. दहिया ने अपनी पुस्तक Jats-The Ancient Rulers में किया है। फिर भी भारतीय इतिहासकारों को क्या प्रमाण चाहिये? प्रो. बी.एस. ढिल्लो (कनाडा वासी) ने भी एक बहुत गहन शोध करके पुस्तक लिखी है- 'History and Study of the Jats' जिसमें सैकड़ों

विदेशी इतिहासकारों के विचार देकर डॉ. बी.एस. दहिया के विचारों को उचित सिद्ध किया है। जाट जाति एक विश्व जाति है, अर्थात् Jat is a Global Race.

सिक्ख धर्म के सभी दस गुरु खत्री जाति से संबंध रखते थे तथा आपस में सभी के सभी रिश्तेदार थे। लेकिन गुरु नानक जी के दो परम शिष्य बाबा बुड्ढा जी, रणधावा गोत्री तथा बाबा बाला जी संधु गोत्री जाट थे। सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्दसिंह जी के समय सिक्ख धर्म के लिए शहीद होनेवाले पहले शहीद वीर योद्धा बाबा बीरसिंह जी घुम्मन गोत्री जाट थे। सिखों के दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी के पंच प्यारों में दूसरे प्यारे धर्मचन्द गाँव जटवाड़ा जिला सहारनपुर उत्तरप्रदेश के मलिक गठवाला गोत्री जाट थे। गुरु तेग बहादुर जी का शीश चाँदनी चौंक से किरतपुर ले जानेवाले दोनों वीर जैतो और दुल्लो जाट थे। गुरु गोविन्दसिंह जी के बच्चों की रक्षा जान पर खेलकर करनेवाली वीरांगना योद्धामाई भागो भी भराइच गोत्र की जाटनी थी। (लेकिन गंगाराम ब्राह्मण की करतूत आगे पढ़ें)। गुरुओं के अखाड़ों की परम्परा जाटों ने ही डाली जो वहाँ कुश्ती और मार्सलआर्ट का अभ्यास करते थे। गुरु गोविन्दसिंह जी की सेना में अधिक संख्या जाटों की थी। आज भी सिक्ख धर्म की शान जाट हैं। याद रहे देश और विदेश के सिक्खों में 70 प्रतिशत संख्या सिक्ख जाटों की है। (History and Study of the Jats)

जाट हिन्दू धर्म में ब्राह्मणवाद के जटिल कर्मकाण्डों व अन्धविश्वासों के कारण हमेशा छटपटाता रहा है और उसे जब भी मौका मिला हिन्दू धर्म (ब्राह्मण धर्म) से मुक्ति पाकर दूसरे धर्म अपनाता रहा है। इसी कड़ी में उसने हिन्दू धर्म के अन्दर रहते हुए भी आर्यसमाज को अपनाया। लेकिन आज यही आर्यसमाज फिर चक्कर काटकर वापिस रूढ़िवादी ब्राह्मणवाद में लुप्त होता जा रहा है। क्योंकि यह फैसला जाटों का उचित नहीं था। (किसान विद्रोह, संघर्ष, सिक्ख इतिहास, राईज ऑफ इस्लाम, राईज ऑफ क्रिस्चनेटी तथा 'भारतीय इतिहास का एक अध्ययन' आदि-आदि)।

और ये कौन जाट थे? पढ़ो तो जानो!

विश्व की किसी भी एक जाति से अधिक जाट जाति में अधिक साधु, सन्त, फकीर व संन्यासी व त्यागी हुये, जो भारत व पाकिस्तान में पूजनीय हैं। वैसे तो उत्तर भारत के पंथ व विचार तथा डेरे लगभग जाटों के ही रहे है। जैसे कि राधा स्वामी दिनौद डेरा मल्हान जाटों का, राधा स्वामी ब्यास डेरा ग्रेवाल जाटों का, सिरसा का सच्चा सौदा डेरा बासी जाटों का । इसी प्रकार स्वामी निश्चल दास दहिया गोत्री जाट ने वैदिक धर्म की व्याख्या पर 'विचार सागर' ग्रंथ लिखकर अपने डेरे की महता बढ़ाई। रोहतक के अस्थल बोहर नाम का नाथ डेरा भी जाटों द्वारा स्थापित डेरा है। वर्तमान में प्रसिद्ध जैन साधु उपेन्द्र मुनि जो एक जैन मुख्यालय के मुखिया हैं, सोनीपत जिले के गांव रिढाना के नरवाल गोत्री जाट परिवार से हैं। वैसे तो जाट जीवन ही सन्त जीवन के एकदम पास रहा है -

तुम चले गये पर चरण चिन्ह क्या मिट सकते हैं।
कोई भी काल आये क्या आपके कर्म घट सकते हैं॥

- **(1) धन्ना जाट भक्त - हरचतवाल गोत्री,**
- **(2) पूर्ण भक्त उर्फ बाबा चौरंगीनाथ - संधु (सिन्धड़) गोत्री**

- **(3) सन्त गरीबदास - धनखड़ गोत्री**
- **(4) बाबा दीपसिंह - संधु गोत्री**
- **(5) बाबा जोगी पीर - चहल गोत्री**
- **(6) पीर बाबा काला मेहर - संधु गोत्री (पाकिस्तान)**
- **(7) हाफीज बरखुरदार - भराइच गोत्री (पाकिस्तान)**
- **(8) लाखन पीर - चीमा गोत्री**
- **(9) सन्त निश्चलदास - दहिया गोत्री**
- **(10) भक्तशिरोमणि रानाबाई - घाना गोत्री (राज.)**
- **(11) पीर साखी सरवर - सरवर गोत्री (पाकिस्तान)**
- **(12) बाबा सिद्ध भोई - धालीवाल गोत्री**
- **(13) पीर बादोके - चीमा गोत्री**
- **(14) बाबा हरिदास - डागर गोत्री (दिल्ली)**
- **(15) बाबा कालूनाथ - गिल गोत्री**
- **(16) बाबा सिद्ध कालींझर - भुल्लर गोत्री**
- **(17) बाबा मेहेर मांगा - बाजवा गोत्री**
- **(18) बाबा आल्टो - ग्रेवाल गोत्री**
- **(19) बाबा सिद्धासन - रणधावा गोत्री**
- **(20) बाबा तिलकारा - सिन्धु गोत्री**
- **(21) सिद्ध सूरतराम - गिल गोत्री**
- **(22) बाबा तुल्ला - बासी गोत्री**
- **(23) बाबा अकालदास - पन्नु गोत्री**
- **(24) बाबा फाला - ढिल्लो गोत्री**

- **(25) शहीद स्वामी स्वतंत्रानन्द सरस्वती - सरोहा गोत्री**
- **(26) बाबा अदी - गर्चा गोत्री**
- **(27) बाबा उदासनाथ - तेवतिया गोत्री**
- **(28) पीर बादोक्यान - चीमा गोत्री**
- **(29) जट्ट ज्योना - मौर गोत्री, लेकिन इनको ब्राह्मणवाद ने ज्यानी चोर कहकर बदनाम किया, क्योंकि ये दक्षिण एशिया में अपने समय के महान् बुद्धिमान् व्यक्ति थे जो बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। इन्होंने ही राजकुमारी महकदे की रक्षा की थी।**
- **(30) स्वामी आनन्द मुनि सरस्वती - राणा गोत्री (उत्तरप्रदेश)**
- **(31) स्वामी केशवानन्द - ढाका गोत्री (राजस्थान) - इन्होंने राजस्थान में शिक्षा क्षेत्र में महान् कार्य किया। संघरिया शिक्षा संस्थान इन्हीं की देन है।**
- **(32) भक्त फूलसिंह - मलिक गोत्री। इनके नाम पर हरियाणा के सोनीपत जिले के खानपुर गांव में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।**
- **(33) लोक देवता वीर तेजा जी - धौला गोत्री, राजस्थान के घर-घर में पूज्यनीय वीर देवता तथा प्रेरणा-स्रोत। इन्हीं के गोत्री भाइयों ने धौलपुर (राज.) शहर बसाया था।**
- **(34) बाबा मस्तनाथ - जाटवंशज**
- **(35) बाबा शिवनाथ - खत्री गोत्री, अस्थल बोहर जिला रोहतक के मुखिया रहे।**
- **(36) सन्त सदाराम जी - रेवाड़ गोत्री जाट, जोधपुर के पूजनीय संत।**
- **(37) सन्त मूदादास जी - वास गोत्री जाट, जोधपुर क्षेत्र में पूजनीय।**
- **(38) साधवी फूलाबाई जी - नागौर क्षेत्र में लोग उनके दर्शन से धन्य होते थे, मांझू जाट गोत्र में जन्मी।**

(नोट- याद रहे हरयाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल का भी यही गोत्र है जो हरयाणवी बिश्नोई जाट हैं न कि शरणार्थी पंजाबी।) इनके परिवार ने अवश्य कुछ दिन पाकिस्तान की भारत सीमा के साथ बहावलपुर स्टेट में अपने रिश्तेदारों के यहां खेती की थी। लेकिन ये सन् 1946 में ही वापिस अपने गांव आ गए थे।

- **(39) चूअरजी जाट जूझा - जिनकी मूर्ति राजस्थान में भगवान् की तरह पूजी जाती है।**
- **(40) सन्त बख्तावर जी - झांझू गोत्री जाट, जिनकी मेवाड़ (राज.) क्षेत्र में पूजा होती है।**
- **(41) हरिभगत कल्याण जी - जाठी गोत्री जाट जोधपुर राजाओं के गुरु कहलाये।**

- **(42) महादानी भगत हर्षराम - फड़गौचा गोत्री जाट जिन्होंने खाटू से 12 कोस दूर पर विस्मयकारी कुंआं बनवाया जो आज भी अजूबा कहलाता है।**

- **(43) गोगामेड़ी वाले - चहल गोत्री जाट, राजस्थान के गजरेरा गांव के रहने वाले थे, जिनके नाम पर मेड़ीधाम विख्यात है। यहां सभी धर्मों के लोग इन्हें पूजने जाते हैं।**

- **(44) दानवीर सेठ छाजूराम - लांबा गोत्री जाट, जिनकी दान आस्था व सामर्थ्य कभी बिड़ला सेठ से भी अधिक थी।**

- **(45) संत गंगा दास - ये महान् कवि संत थे जिनकी रचना 'गंगा सागर' संत सूरदास की रचनाओं के समक्ष मानी जाती है। ये गाजियाबाद के पास रसलपुर-बहलोलपुर के मुंडेर गोत्री जाट थे।**

- **(46) बाबा सावनसिंह - ग्रेवाल गोत्री - राधा स्वामी ब्यास**

- **(47) जगदेवसिंह सिंह सिद्धान्ती - अहलावत गोत्री, यह महान् आर्यसमाजी तथा सांसद भी रहे ।**

- **(48) राधा स्वामी ताराचन्द - मल्हान गोत्री - राधा स्वामी दिनोद सत्संग के संस्थापक।**

- **(49) भगवानदेव आचार्य उर्फ स्वामी ओमानन्द – खत्री गोत्री, यह महान् आर्यसमाजी जिन्होंने कन्या गुरुकुल नरेला तथा गुरुकुल झज्जर की स्थापना की।**

- **(50) सन्त जरनैलसिंह भिण्डरवाला - बराड़ गोत्री जिन्होंने सन् 1984 में विद्रोह किया।**

- **(51) संत कैप्टन लालचन्द - जिला चुरू के रहने वाले सहारण गोत्री जाट जिन्होंने एक नया अध्यात्मक विचार पैदा किया।**

- **(52) त्यागी मनसाराम व बूज्जाभगत - श्योराण गोत्री, आदि-आदि।**

[edit] कुछ अन्य वीर योद्धा व विख्यात जाट, जिन्हें इतिहास ने भुलाया

कह न सकेगा देव भी, जाट वंश की गौरव कहानी।
प्रेम से जिसने मिटा दी, देश हित में अपनी निशानी ॥

यह प्रामाणित सत्य है कि जो व्यक्ति अपने पूर्वजों के साहसिक कार्य पर गर्व नहीं करेगा वह अपने जीवन में ऐसा कुछ नहीं कर पायेगा जिस पर उसके वंशज गर्व कर सकें।

- **(1) वीर जाट द्रहम - ये चन्द्रवंशी जाट थे जिन्होंने 2207 ईसा पूर्व चीन के तातार प्रदेश में पहुंचकर राज की स्थापना की, जिसे बाद में यूती जाति के नाम से जाना गया। यही चीन के पहले राजा हुए हैं।**

- **(2) जाट योद्धा स्कन्दनाभ - ये चन्द्रवंशी जाट थ जो सबसे पहले अपने दल के साथ 500 ईसा पूर्व एशिया माइनर से होते हुए यूरोप पहुंचे तथा इसी नाम पर स्कंदनाभ राज बनाया जो बाद में स्कैण्डीनेविया कहलाया**

तथा जटलैण्ड की स्थापना की जिसे आज भी जटलैण्ड ही कहा जाता है। इसके बाद बैंस, मोर, तुड़ आदि अनेक गोत्रीय जाट गए जो पूरे यूरोप में फैले जिन्हें बाद में गाथ व जिट्स आदि नामों से जाना गया।

- **(3) राजा गज - इन्होंने सबसे पहले अफगानिस्तान में गजनी राज की स्थापना की तथा गजनी के पास बुद्ध का एक बड़ा विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्तूप बनवाया था जिसे सन् 2001 में सभी विरोधों के बावजूद तालिबानियों ने डायनामाइट से उड़वा दिया। राजा गज के वंशज राजा बालन्द ने इस्लाम धर्म अपनाया। इसके बाद वहां के सभी जाट मुस्लिम धर्मी हो गए और इन जाटों ने चंगताई नामक मुगलवंश की स्थापना की।**

- **(4) राजा वीरभद्र - इन्हें जाटों का प्रथम राजा कहा जाता है, जिन्होंने हरद्वार पर राज किया। इनके नाम पर हरद्वार के पास रेलवे स्टेशन है। इनका वर्णन देव संहिता में है। नील गंगा को जाट खोद कर लाये थे जिसे आज भी जाट गंगा कहा जाता है।**

- **(5) '*मता जाट राजा* - ये शिवी गोत्री जाट थे, जिन्होंने शिवस्तान पर राज किया।**

- **(6) राजा चित्रवर्मा - ये बलोचिस्तान के राजा थे, जिनकी राजधानी कुतुल थी।**

- **(7) राजा चन्द्रराम - हाला गोत्री जाट, जिसने सूस्थान पर राज**

किया।

- **(8) नरेश मूसक सेन - मौर गोत्र के जाट राजा जिन्होंने सिन्ध पर राज किया। इन्होंने सिकन्दर को सिन्ध से ब्यास तक पहुंचने पर 19 महीने तक उलझाए रखा।**

- **(9) राजा सिन्धुसेन - मौर गोत्री जाट, जो सिन्ध के प्रसिद्ध राजा हुए।**

- **(10) महाराजा जगदेव पंवार - अमरकोट के प्रसिद्ध राजा हुए जो पंवार गोत्री थे। गुजरात के जाट राजा सिद्धराज सोलंकी ने अपनी सुन्दर कन्या वीरमती का इनसे विवाह किया था। लोहचब पंवार गोत्र भी इन्हीं के वंशज हैं।**

- **(11) नरेश वछीपाल - कुलड़िया गोत्री जाट, जिसने मारवाड़ (राज.) पर राज किया।**

- **(12) नरेश कंवरपाल - कंसवा गोत्री जाट, जिन्होंने जांगल प्रदेश (राज.) पर राज किया। इनका राज सातवीं सदी तक था। ये महान् प्रशासक थे।**

- **(13) नरेश कान्हा देव - ये पूनियां गोत्री जाट राजा थे। इनका पश्चिमी राजस्थान पर राज था। इन्हें कभी नहीं हारनेवाला राजा कहा गया है।**

- **(14) राजा जयपाल - दसवीं सदी के महान् जाट राजा हुए, जिनका विशाल राज्य था। इन्हीं का पुत्र राजा आनन्दपाल तथा इनका पौत्र सुखपाल हुआ, जिसने मुस्लिम धर्म अपनाया और नवाबशाह कहलाये।**

- **(15) सम्राट् कक्कुक - काक गोत्री जाट, जिसने जोधपुर क्षेत्र पर राज किया।**

- **(16) नरेश सिद्धराज विष्णु - पल्लव गोत्री जाट, जिसने दक्षिणी भारत पर राज किया।**

- **(17) नरेश नरसिंह वर्मन - नरेश सिद्धराव के पौत्र जिसने सन् 640 में श्रीलंका पर विजय पाई।**

- **(18) राजा रिसालू - सातवीं सदी में स्यालकोट क्षेत्र पर राज किया।**

- **(19) राजा भोज - पंवार गोत्री जाट, जिनका इतिहास आज भी गांव के लोगों की जनश्रुतियों में है।**

- **(20) राजा मुंजदेव - पंवार गोत्री जाट, जिनका दसवीं सदी में मालवा (पंजाब) क्षेत्र पर राज था।**

- **(21) राजा अजीत व राज बछराज - मोहिल गोत्री जाट, जिनका राजपूतों से पहले जोधपुर पर राज था। याद रहे जोधपुर व जालौर के किले दहिया जाट राजाओं ने बनवाये थे।**

- **(22) राजा शिशुपाल - चेदि गोत्री जाट, जिसने बुन्देलखण्ड पर राज किया।**

- **(23) सम्राट् चकवाबैन - इनका पूरे पंजाब पर राज रहा, इन्हीं के पौत्र मघ ने स्वप्नसुन्दरी राजकुमारी निहालदे से विवाह किया। इसी चकवाबैन से जाटों के बैनीवाल गोत्र की उत्पत्ति हुई।**

- **(24) [[Maharaja Chhatra Singh Rana|राजा छत्रसाल - गोहद (मध्यप्रदेश) के राजा, जिन्होंने लड़ाई में मराठों को हराया।**

- **(25) <u>सरदार झूंझा</u> - नेहरा गोत्री जाट योद्धा जिसके नाम पर झूंझनू (राजस्थान) शहर बसाया। नेहरा जाटों का राज राजस्थान में नरहड़ और नाहरपुर पर था। इसलिए इस क्षेत्र (राज.) को पहले नेहरावाटी कहते थे, जो बाद में शेखावाटी कहलाया।**

- **(26) कंवरपाल जाट - कसवां गोत्री जाट, जिसने राजस्थान में राठौर राजपूतों से आखिर तक लोहा लिया।**

- **(27) तोला सरदार - तोयल गोत्री योद्धा जाट जिसने नागौर (राज.) जिले के खारी क्षेत्र पर राज किया। यहां शिलालेख मिला है जिस पर लिखा है-**

  अकबर सूं तोला मिला करके बात करारी।
  पट्टी रहू मैं नगौररी घर म्हारा खारी।।

- **(28) बीजल जाट - मान गोत्री जाट जिसने ढोसी (हरयाणा) पर राज किया।**

- **(29) राजा विजयराव - भटिण्डा क्षेत्र के राजा राव गोत्री जाट जिसने एक बार गजनी को लूटकर नंगा कर दिया था। राव गोत्री जाटों के गांव उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ जिले में हैं। सांगवानों के गांव खेड़ी बत्तर में भी राव जाटों के कुछ घर हैं।**

- **(30) वीर योद्धा हेमू उर्फ बसन्त राय जाट भारतीय इतिहास में इस महान् जाट को बार-बार बनिया और बकाल लिखा गया है। लेकिन सच्चे इतिहास को दबा दिया गया और इन्हें जाट कहने से परहेज किया गया। इसी प्रकार विष्णु-प्रभाकर की पुस्तक 'शहीद भगतसिंह' में चौ० छाजूराम को बार-बार सेठ लिखा गया है और कहीं भी चौधरी, लाम्बा या जाट नहीं लिखा गया। आने वाले 500 सालों के बाद इन्हें भी बनिया या बकाल मान लिया**

जाएगा। जैसा कि आज हेमू जाट के साथ हो रहा है। अंग्रेज लेखक सर एडवर्ड सुलीवान की पुस्तक 'मुगल इम्पायर इन इण्डिया' के पेज नं० 259-260 में यह सच्चाई दर्ज है, जो इस प्रकार है -

हेमू का असली नाम बसंत राय था जो अलवर क्षेत्र में तिजारा के पास देवती गांव का रहने वाला जाट जमींदार का लड़का था, जिनके पिता का नाम परणपाल था। इनके बड़े भाई का नाम जुझारूपाल तथा बहिन का नाम पूनम बाई था। बड़ा होने पर इन्होंने शौरे का व्यापार शुरू किया जो बारूद बनाने में काम आता है। इसने शेरशाह सूरी के लड़के सलीम शाह को शौरा सप्लाई करना आरम्भ किया, जिसके कारण उसके साथ उसकी मित्रता हो गई। शेरशाह सूरी के खानदान का जाटों से भावनात्मक लगाव था क्योंकि हुमायूं के साथ लड़ाई में जाटों ने शेरशाह का साथ दिया था जिसका कारण था कि शेरशाह ने बचपन में जाटों के यहां नौकरी की थी। (शेरशाह शूरी खत्री जाति से सम्बन्ध रखता था।) बसन्त राय उर्फ हेमू में जाट होने के कारण क्षत्रिय गुण स्वाभाविक थे, रिवाड़ी कस्बे में रविदास नाम के ब्राह्मण से इनकी मित्रता थी जहां वे अक्सर आते-जाते ठहरा करते थे। सलीम शाह के बाद शेरशाह सूरी का साला आदिलशाह गद्दी पर बैठा तो उसके साथ भी बसन्त राय की व्यापार और मित्रता घनिष्ठ होती चली गई। एक दिन आदिलशाह बीमार पड़ गया तो कालिंजर किले की कमान बसन्त राय उर्फ हेमू को संभालनी पड़ी। बसन्त राय को युद्ध कला से बाल्यकाल से लगाव था जिस कारण उसने एक दिन सेनापति का कार्यभार संभाल लिया।

एक दिन उन्होंने अपनी सेना के साथ दिल्ली के लिए कूच किया और 7 अक्तूबर 1556 को दिल्ली को जीत लिया तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। 7 अक्तूबर 1556 से 5 नवम्बर 1556 तक अर्थात् एक महीना दिल्ली पर राज किया। इसी बीच पानीपत की दूसरी लड़ाई लड़नी पड़ी जिसमें बसन्त राय उर्फ हेमू ने एक सेनापति के बतौर शौर्य के साथ युद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होकर भारतीय इतिहास में विख्यात हुए।

इससे स्प्ष्ट है कि हेमू एक वीर जाट था लेकिन व्यापार करने के नाते उसे बनिया कहा जाता है तथा ब्राह्मण से मित्रता होने के कारण एक ब्राह्मण भी बतलाया जाता है। लेखक ने मालूम किया कि देवती गांव आज भी जाटों का गांव है।

- (31) विजयपाल जाट - इन्होंने आज के भरतपुर (राज.) के पास तवणगढ़ बसाया फिर डीग के पास सिनसिनी गांव बसाया और यही सिनसीनवार गोत्री जाट कहलाए, जिन्होंने सन् 1723 में भरतपुर राज्य की विधिवत् स्थापना की।

- (32) चूड़ामन जाट - ये बहादुर चूड़ामन जाट सिनसीनवार जाट खाप के प्रधान थे जिन्होंने बहादुर जाटों की अपनी एक सेना बना ली थी जो मुगलों के दक्षिण से आने वाले खजानों को लूट लेती थी और अपने क्षेत्र से मुगलों को जमीन की कोई भी मालगुजारी नहीं देते थे। यही वीर चूड़ामन जाट वास्तव में भरतपुर रियासत के आधार रखने वाले थे, जिन्हें 'बेताज बादशाह' कहा जाता है। जाटों को लुटेरा कहे जाने का एक कारण चूड़ामन जाट है जिन्होंने केवल मुगलों को ही जी भर कर लूटा था।

- (33) महाराजा बदनसिंह - जैसा कि ऊपर लिखा है कि भरतपुर रियासत का आधार चूड़ामन जाट ने रखा था, लेकिन इस रियासत के विधिवत् पहले राजा बदनसिंह थे, जिन्होंने इसको एक विशाल रियासत का पूर्ण रूप देकर अपनी सीमाओं का विस्तार किया।

- (34) वीर चरहतसिंह जाट - पंजाब में अब्दाली को धावा बोलकर लूटा।

- **(35) योद्धा रोरियासिंह जाट - सिनसिनवार गोत्री जाट, जिसने अपने ब्रज क्षेत्र में जाट खापों को इकट्ठा करके सबसे पहले सन् 1635 में मुगल शासन का विरोध किया।**

- **(36) नन्दराम जाट सरदार - ठेनुवा गोत्री जाट जिसने जमनापार मुगलों के विरुद्ध झण्डा बुलन्द किया।**

- **(37) योद्धा मोहन मढान - मढान गोत्री जाट, जिसने सन् 1526 के आसपास किलायत (हरयाणा) रियासत की स्थापना की। बाद में इन्हीं के वंशजों से मुस्लिम धर्म अपनाया और चौधरी लियाकत अली खां पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमन्त्री इसी खानदान से थे।**

- **(38) वीर योद्धा रामलाल खोखर - खोखर गोत्री जाट - जिसने 15 मार्च सन् 1206 को मोहम्मद गौरी उर्फ साहबुद्दीन गौरी को लाहौर के पास लड़ाई में मारा था।**

- **(39) सेनापति कीर्तिमल - लड़ाई में राणा सांगा का मुख्य सेनापति, जो राणा सांगा को घायल अवस्था में युद्धभूमि से खींचकर बाहर लाये तथा उनका ताज पहनकर लड़ते हुए शहीद हुए। ये वीर योद्धा धौलपुर के भम्भरोलिया गोत्री जाट थे।**

- **(40) सरदार श्यामसिंह - यह एंगलो सिक्ख लड़ाई में सेनापति थे जो बराड़ गोत्री जाट थे।**

- **(41) रहमत खाँ भराइच - भराइच गोत्री जाट, जिसने गुजरात किले पर कब्जा किया।**

- **(42) सरदार भीमसिंह - ढिल्लों गोत्री जाट, जिसने भंगी मिसल की स्थापना की।**

- **(43) भीमसिंह राणा - जाटों की गोहद रियासत के राजा जिन्होंने ग्वालियर किले को फतेह किया- राणा इनकी उपाधि थी, गोत्र भम्भरोलिया था। इसी विजय को मध्यप्रदेश के जाट आज भी हर वर्ष राम नवमी के दिन एक विजय दिवस के रूप में मनाते हैं। ग्वालियर के चारों ओर जाटों की अनेक गढ़िया हैं।**

- **(44) छत्तरसिंह राणा - ग्वालियर के आखरी जाट राजा, भम्भरोलिया गोत्र के जाट थे। जाटों ने गवालियर पर सन् 1755 से 1785 तक शासन किया।**

- **(45) वीर सज्जनसिंह - बालियान गोत्री जाट थे जिन्होंने सतारा (महाराष्ट्र) रियासत की स्थापना की।**

- **(46) वीर विक्रमशाह राणा वीरेन्द्रसिंह - नेपाल नरेश के पूर्वज गहलोत वंशी जाट थे।**

- **(47) जयसिंह कान्हा - सिन्धु गोत्री, जिसने कान्हा मिसल की स्थापना की।**

- **(48) सरदार हीरासिंह भंगी - ढिल्लों महान् योद्धा भीमसिंह का भतीजा।**

- **(49) राजा जोधासिंह - बराड़ गोत्री जाट, जिसने कोटकपूरा (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**

- **(50) राजा जाटवान - मलिक गठवाला गोत्री जाट, जो दिपालपुर (हरयाणा) राज के राजा थे जिसने कतुबुद्दीन ऐबक को नाकों चने चबाये।**

- **(51) राजा हस्ती - तक्षक (टोकस) गोत्री जाट जिसका सिंध पर राज था तथा राजा पोरस के रिश्तेदार थे जिन्होंने सिकन्दर से बहादुरी से लोहा लिया।**
- **(52) शालेन्द्र जाट - महाराजा कनिष्क के रिश्तेदार तथा पंजाब के मालवा से कोटा तक राज किया, इन्हीं के वंशज शालीवाहन ने स्यालकोट बसाया।**
- **(53) नवाब कपूरसिंह - विर्क गोत्री जाट, जिसने 'दल खालसा' तथा सिंघपुरिया मिसल की स्थापना की।**
- **(54) खौसालसिंह - रामगढ़िया मिसल की स्थापना की।**
- **(55) राव दुलसिंह - बराड़ गोत्री जाट, जिसने फरीदकोट (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**
- **(56) सरदार बघेलसिंह ढिल्लो के पुत्रों ने कसलिया और फतेहगढ़ (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**
- **(57) कलियाणा जाट सरदार उज्जैन (मध्यप्रदेश) के शासक रहे जिससे जाटों का कल्याण गोत्र प्रचलित हुआ।**
- **(58) वीर दरगा - सिन्धु गोत्री जाट जिसने सिराववाली (पंजाब) राज की स्थापना की।**
- **(59) वीर गुरदतमल - सिन्धु गोत्री जिसने बडाला (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**
- **(60) दयानल - रणधावा गोत्री जाट जिसने 'खंदा' (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**
- **(61) भगत जाट औम - सिन्धु गोत्री जाट जिसके वंशजों ने भटिण्डा, कैथल व दूनोली (पंजाब) पर राज किया।**
- **(62) वीरराज रामधन - दलाल गोत्री जाट जिसने कुचेसर (उत्तरप्रदेश) रियासत की स्थापना की।**
- **(63) वीर योद्धा सुन्दरसिंह - जिसने जारखी (उत्तरप्रदेश)रियासत की स्थापना की।**
- **(64) वीर नन्दरामसिंह - जिसने हाथरस (उत्तरप्रदेश) रियासत की स्थापना की।**
- **(65) वीरराज जयदेव - भम्भरोलिया गोत्री जाट जिसने धौलपुर (राजस्थान) और गोहद (मध्यप्रदेश) रियासतों की स्थापना की।**
- **(66) वीरशिरोमणि भज्जासिंह - सिनसिनवार गोत्री जाट, जिसने शहजादा बेदाबख्त तथा बिशनसिंह राजपूत की सेनाओं को सिनसिनी युद्ध में नाकों चने चबाये।**
- **(67) वीर कैलाश - बाजवा गोत्री जाट जिसने कैलाश बाजवा (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**
- **(68) वीर सूरजप्रकाश जाट - दहिया गोत्री जाट, एक सेनापति जिसने तुर्कों को करनाल के मैदान में हराया।**
- **(69) दसोदासिंह - गिल गोत्री जाट जिसने निशानवाला मिसल की स्थापना की।**
- **(70) चतरसिंह - शिवी गोत्री जाट जो महाराजा रणजीतसिंह के दादा थे जिन्होंने सुकरचकिया मिसल की स्थापना की।**

- **(71) करोड़ासिंह - विर्क गोत्री जाट जिन्होंने 'करोड़ा सिंघया' मिसल की स्थापना की।**

- **(72) तीलोका - सिन्धु गोत्री जाट फूलसिंह का लड़का जिसके दो पुत्रों ने नाभा (पंजाब) व जीन्द (हरयाणा) रियासतों की स्थापना की। फूलसिंह के वंशजों ने ही नाभा, जीन्द और पटियाला रियासतों की स्थापना की, इसलिए ये फूलकिया रियासत कहलाई।**

- **(73) ठाकुरसिंह सन्धानवाला - सिन्धु गोत्री जाट जिसने 'सिंघसभा' की स्थापना की।**

- **(74) हीरासिंह - नकई गोत्री जाट जिन्होंने 'नकई' मिसल की स्थापना की।**

- **(75) बाबा आलासिंह - सिन्धु बराड़ गोत्री जाट जिसने 'पटियाला' रियासत की स्थापना की। नोटः- बराड़ गोत्र का निकास संधु, सिन्धु, सिधु व सिन्धड़ गोत्र से है। सिंधु गोत्र के 36 गांव हैं । रामपुरा फूल जिला भटिण्डा (पंजाब) में है।**

- **(76) <u>स्वामी केशवानन्द</u> - ये राजस्थान के रहने वाले ढाका गोत्री जाट थे जो अत्यन्त गरीबी में पैदा हुए जिनके पास बचपन में पहनने के लिए जूते भी नहीं होते थे। इन्होंने अपने महान् तप और तपस्या से राजस्थान के संघरिया शिक्षण संस्थानों की नींव डाली। सन् 1927 में गुरु ग्रंथसाहिब का हिन्दी में अनुवाद करवाया तथा 1945 में सिक्ख इतिहास का हिन्दी में अनुवाद किया। राजस्थान में जाटों की शिक्षा की उन्नति में स्वामी जी का बड़ा हाथ है जिससे राजस्थान के जाट इनके बहुत ही ऋणी अनुभव करते हैं। जाट जाति को इन पर गर्व है।**

- **(77) <u>भरतपुर नरेश कृष्ण सिंह</u> - ये अंग्रेजों के समय 26 अगस्त 1900 को भरतपुर रियासत के राज्याधिकारी बने जिन्होंने अपनी प्रजा के लिए अनेक सार्वजनिक कार्य किए। इन्हें हमारी जाट कौम से विशेष स्नेह था।**

- **(78) जननायक राजा मानसिंह - राज मानसिंह एक जननायक कर्मठ और शेर-ए-दिल इंसान थे जिनकी निर्मम हत्या दिनांक 21 फरवरी 1985 को डींग की अनाज मण्डी में राजस्थान के मुख्यमन्त्री शिव चरण माथुर के हेलीकाप्टर को अपनी जीप से टक्कर मारकर तोड़ डालने के कारण की गई, जिसका कारण था चुनाव में इनके पोस्टर और बैनर फाड़ दिए गए थे।**

- **(79) आला-उद्दल-मलखान - वत्स गोत्री जाट जिनके साथ युद्ध में पृथ्वीराज चौहान का पुत्र पारस मारा गया था।**

- **(80) जाटनी सदाकौर - कन्हैया मिसल की सरदार (मुखिया) महाराजा रणजीतसिंह की सास।**

- **(81) अकाली फूलासिंह - सहारण गोत्री जाट महाराजा रणजीतसिहं के सेनापति तथा अकाल तख्त के जत्थेदार।**

- **(82) वीर कान्हा रावत - मेवात के रहने वाले रावत गोत्री जाट जो औरंगजेब के विरुद्ध लड़कर शहीद हुए। इस वीर जाट को औरंगजेब ने जिंदा जमीन में गड़वा दिया था जिनका इतिहास बहुत लम्बा है।**

- **(83) [[Raja Mahendra Pratap|क्रांतिकारी राजा महेन्द्रप्रताप - ठेनुवा गोत्री मुरसान (उ०प्र०) के जाट राजा जिसने देश की आजादी के लिए अपनी रियासत की बलि चढ़ा दी और 32 साल विदेशों में रहकर 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना करके आजादी का बिगुल बजाते रहे। आई.एन.ए. के वास्तविक संस्थापक वही थे, नेता**

जी इसके सेनापति थे तो राजा जी इसके राष्ट्रपति थे। लेकिन अफसोस है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र को छोड़कर जाट भी उनके बारे में नहीं जानते।

- (84) जनरल मोहनसिंह - नेता जी सुभाष की आई.एन.ए. में एक प्रमुख सेनापति थे।
- (85) वीर योद्धा पदमसिंह जाट - आई.एन.ए. में वीरता की सबसे बड़ी उपाधि 'वीर-ए-हिन्द' थी, जिसमें एकमात्र हिन्दू को यह उपाधि मिली बाकी दो मुसलमानधर्मी गैर जाट थे। नेता जी को इन पर बड़ा गर्व था।
- (86) वीर अजीतसिंह शहीद भगतसिंह के चाचा जी तथा महान् क्रांतिकारी जिन्होंने नारा दिया 'पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा पगड़ी सम्भाल'।
- (87) शहीद वीर बन्तासिंह - दायमा गोत्र के जाट, शहीद भगतसिंह के साथी तथा महान् निडर क्रांतिकारी।
- (87) शहीद वीर बन्तासिंह - दायमा गोत्र के जाट, शहीद भगतसिंह के साथी तथा महान निडर क्रान्तिकारी।
- (88) शेरे दिल अवतारसिंह शराबा - ग्रेवाल गोत्री शहीद भगत सिंह के आदर्श, जिनको फांसी की सजा सुनाने के 4 महीने बाद जब फांसी हुई तो 8 किलो वजन बढ़ा हुआ मिला।
- (89) वीर बाबा बेशाखासिंह - महान् क्रांतिकारी और अंग्रेजी सरकार का बड़ा सिरदर्द।
- (90) शेरे दिल शहीद हरिकिशन - महान् क्रांतिकारी जिसको फांसी सुनाने पर उन्होंने जज से कहा - very good.
- (91) ताना जाट - मलसूरा गोत्री जाट जिसने शिवाजी व उसके पुत्र सम्भाजी को औंरगजेब की जेल से मिठाई के टोकरों में बाहर निकाला।
- (92) मेजर जयपालसिंह मलिक - महान् क्रांतिकारी जो अंग्रेजी सेना के सीने में कील थे।
- (93) शहीद रंगासिंह व शहीद वीरसिंह - आजादी के दीवाने।
- (94) वीर योद्धा सज्जनसिंह जाट - सतारा रियासत के संस्थापक (महाराष्ट्र)।
- (95) हरफूल जाट जुलानीवाला - श्योराण गोत्री जाट, इनकी बहादुरी मंगल पाण्डे से कई गुणा अधिक थी। ये जींद जिला हरयाणा के जुलानी गांव के रहने वाले थे।
- (96) हीर-रांझा - दक्षिण एशिया के महान् जाटयुगल प्रेमी हुए जिसमें लड़की का नाम हीर तथा गोत्र 'स्याल' था, लड़के का नाम ढिढ़ो तथा गोत्र रांझा था।
- (97) मिर्जा और साईबा - महान् प्रेमीयुगल हुए, जिसमें मिर्जा खरल गोत्री जाट तथा साईबा भराईच गोत्री जट्ट पुत्री थी।
- (98) पील्लू जट्ट - मिर्जा साहिबा पर लोकगीत लिखकर एक विशाल साहित्य की रचना की।
- (99) कादर यार - सन्धु गोत्री जाट जिसने पूरण भक्त पर लोकगीत तथा साहित्य की रचना की।

- **(100) भाई मनीसिंह - 'दौलत' गोत्री योद्धा। एक लेखक और शहीद जिन्होंने मौलिक 'गुरुग्रंथ' को लिपिबद्ध किया।**

- **(101) भाई महताबसिंह - भंगू गोत्री वीर योद्धा जाट – जिसने स्वर्ण मन्दिर को अपवित्र करने वाले रांघड़ों से बदला लिया।**

- **(102) राजा राव नैनसिंह - ये कश्यप गोत्री जाट थे, राव इनकी उपाधि थी। इनका छोटा सा व आखिरी राज 12वीं सदी में ब्यावर (राज.) के लहरीग्राम में था। जो आज रैबारी जाति का ग्राम है। ये चौ. संग्रामसिंह जिनके नाम पर सांगवान गोत्र का प्रचलन हुआ, के पिता थे। पहले इन कश्यप गोत्री जाटों का बड़ा पंचायती राज सारसू जांगल (राज.) पर था। राव व सांघा इन जाटों की उपाधि रही हैं। 14वीं सदी में चरखी दादरी (हरयाणा) क्षेत्र में आए।**

- **(103) धौलपुर नरेश उदयभानुसिंह - इन्होंने दिल्ली के बिरला मन्दिर की नींव अपने करकमलों से सन् 1932 में रखी थी। इसका पत्थर मन्दिर के बायीं तरफ पार्क में लगा हुआ है।**

- **(104) वीर योद्धा रामसिंह - ये खोजा गोत्री जाट थे, जिन्होंने राजस्थान में 11वीं सदी में टोंकरा शहर बंसाया जो आज टोंक कहलाता है।**

- **(105) वीर नल्ह विजयराणिया - इतिहासकार लिखते हैं कि इनके पूर्वज सिकन्दर की सेना में भारत आये थे। ये स्वयं भी सिकन्दर के एक सेनापति थे। ये विजयराणा इनकी पदवी थी, इन्हीं के वंशज योद्धा जगतसिंह, वीरसिंह व देवराज आदि हुए। यह पदवी इनके गोत्र में बदल गई और आज गलत उच्चारण करके इन्हें लोग बिजाणियां बोलते हैं। याद रहे सिकन्दर की सेना में काफी जाट थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमेशा जाट ही जाट से लड़ते रहे। जब सिकन्दर की सेना ने ब्यास से आगे बढ़ने से मना कर दिया तो सिकन्दर ने कहा था "मैं जाटों के साथ आगे बढ़ जाऊंगा"।**

- **(106) वीर खेमसिंह - भूखर गोत्री जाट, जिसका सांभर प्रदेश (राज.) पर राज था। इन्हीं के वंशज योद्धा उदयसिंह हुए।**

- **(107) जाटनरेश सम्मतराज - ये भादु गोत्री महान् योद्धा जाट राजा हुए, जिन्होंने राजस्थान में भादरा बसाया और राज किया।**

- **(108) शेर जाट रणमल - इस योद्धा जाट ने जहां रणखंभ गाड़ा था वही बाद में राजस्थान में रणथम्भौर कहलाया। बाद में यह राज चौहान राजपूतों के हाथ चला गया।**

- **(109) नरेश नागावलोक - यह नागिल गोत्री जाट थे जिनका मेदपाट (राज.) पर राज था। बाद में इन जाटों ने नागौर व नोहर पर भी राज किया।**

- **(110) सरदार लाडसिंह - यह जाखड़ गोत्री जाट थे, जिन्होंने हरयाणा में लाडान गांव बसाया। ये योद्धा जाखड़ गोत्र के कुछ जाटों को राजस्थान से हरयाणा क्षेत्र में लाये।**

- **(111) वीर बादल और गौरा - राणा रायमल के दो जाट सेनापति थे जिनके नाम पर चितौड़ में दो गुम्बजदार मकान हैं। ये चाचा भतीजे थे।**

- **(112) वीर शहीद माड़ू उर्फ उदयसिंह - ये वीर योद्धा शूरवीर गोकुला जाट के साथ शहीद हुए।**
- **(113) नेता श्रीपत माखन - ठेनुवा गोत्री जाट, जो जाटों को ब्रज क्षेत्र में लाये और टप्पा रावरा (उ.प्र.) रियासत की स्थापना की।**
- **(114) जाट योद्धा भागमल - मीठा गोत्री जाट, जिसने इटावा (उ.प्र.) के पास फफूद राज्य की स्थापना की।**
- **(115) वीर योद्धा पाखरिया - महाराजा जवाहरसिंह भरतपुर नरेश के सेनापति। खुटेल गोत्री जाट जिसने लाल किले के किवाड़ उतारकर भरतपुर पहुंचाये।**
- **(116) सेनापति पूर्ण जाट - गढवाल गोत्री जाट, जो मलखान के सेनापति थे। इन्हीं के पूर्वजों ने उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर का निर्माण करवाया।**
- **(117) प्रचण्ड वीर खेमकरण - शूर गोत्री जाट, जिनके कारण शौरसेन क्षेत्र कहलाया।**
- **(118) योद्धा रामकी चाहर - चाहर गोत्री जाट, जिसने ब्रज क्षेत्र में मुगलों का छाया की तरह पीछा किया। मुगल औरतें अपने बच्चों को इनका नाम लेकर डराया करती थीं।**
- **(119) वीर योद्धा हाथीसिंह - खुटले गोत्री जाट, जिसने सोख (उ.प्र.) किले का निर्माण करवाया।**
- **(120) राजा सरकटसिंह - शेखपुरा (पंजाब) के जाट राजा जो लड़ाई में दुश्मन का सिर काटने में माहिर थे, जिस कारण इनका नाम सरकटसिंह पड़ा।**
- **(121) जाट नरेश शेरसिंह - अफगानिस्तान के हजारा राज के प्रसिद्ध राजा हुए।**
- **(122) योद्धा पदार्थसिंह - इन्होंने सहारनपुर (उ.प्र.) रियासत की स्थापना की।**
- **(123) योद्धा फोदासिंह - कुन्तल गोत्री जाट, जो महाराजा सूरजमल के एक सेनापति थे।**
- **(124) वीर शहीद हरबीर गुलिया - बादली (हरयाणा) के गुलिया गोत्री जाट योद्धा जिसने तैमूरलंग की छाती में भाला मारकर सख्त घायल किया। लेकिन स्वयं 52 घाव होने पर लड़ते हुए शहीद हुए।**
- **(125) हरावल जाट - महाराजा सूरजमल के एक अन्य वीर सेनापति।**
- **(126) शंकर जाट - भरतपुर नरेश नवलसिंह के महान् योद्धा सेनापति।**
- **(127) राजा भूपसिंह - मुरसान तथा [[Hathras|हाथरस (उ.प्र.) के जाट राजा जिसने कभी जाटों को भूमिकर नहीं देने दिया।**
- **(128) महारानी जिन्दा - महाराजा रणजीतसिंह की महारानी जिन्होंने कुछ समय के लिए महाराजा रणजीतसिंह के राज पर राज किया।**
- **(129) योद्धा वीरदत्ता - बराड़ गोत्री जाट, जिसने नाभा (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**

- **(130) रावसिध - बराड़ गोत्री योद्धा, जिसने फरीदकोट (पंजाब) रियासत की स्थापना की।**

- **(131) सुखचैन - बराड़ गोत्री जाट, जीन्द (हरयाणा) रियासत के संस्थापक।**

- **(132) महारानी किशोरी देवी - महाराजा सूरजमल की बहादुर रानी जिसने लाल किले की चढ़ाई में भाग लिया तथा पुष्कर में परभी की लूट का कारण बनी तथा वहां जाट घाट बनवाया।**

- **(133) बलराम जाट - रानी किशोरी का भाई, जो लाल किले की लड़ाई में किले के दरवाजों पर पीठ लगाकर हाथी से टक्कर मरवाकर शहीद हुए।**

- **(134) वीरांगना समाकौर - मलिक जाटों की बेटी तथा अहलावत जाटों की बहू, जिसने कलानौर नवाब की गलत प्रथाओं को मानने से इनकार किया तथा नवाब और उसके परिवार के अन्त का कारण बनी।**

  नोट - इस कुप्रथा के बारे में लोगों ने बहुत अनाप-शनाप लिखा ह। इसे 'कलानौर का कोला पूजा प्रथा' कहा जाता था। कोला का अर्थ है मुख्य दरवाजे के दोनों तरफ के हिस्से, जिसको वहां से गुजरनेवाली नई नवेली दुल्हन को नवाब की कोठी (गढ़ी) के दरवाजे के साथ दीपक जलाकर साथ पतासे रखकर दोनों तरफ कोलों पर पानी के छीटें मारकर पूजा करनी पड़ती थी। इसके अलावा जो बतलाते हैं कोरी बकवास है जिसके प्रमाण हैं। चौधरी सूरजमल सांगवान ने भी इसका पूरा सच्चा वर्णन अपनी पुस्तक 'किसान संघर्ष और विद्रोह' में किया है।

- **(135) योद्धा ढलैत - सांगवान गोत्री जाट, जो सर्वखाप सेना के सेनापति थे, जिसने कलानौर नवाबी का नाश किया। इनकी यादगार गांव गढ़टेकना (रोहतक) में बनी है।**

- **(136) बीबी साहिबकौर - सरदार जाट गुलाबसिंह की पुत्री, जिसने सन् 1787 में राजगढ़ के मैदान में मराठों को लड़ाई में धूल चटाई।**

- **(137) वीरांगना सोमा देवी - चाहर गोत्र की जाटपुत्री, जिसने बीकानेर में सिधमुख स्थान पर लड़ाई में मुगलसेना टुकड़ी को धूल चटाई।**

- **(138) वीरांगना हरशरणकौर - मान गोत्र की जटपुत्री, जिसने 1837 में जमरोद (पाकिस्तान) के किले की अपनी बहादुरी से रक्षा की।**

- **(139) सम्राट् अवन्ती वर्मन - उत्पल गोत्री महान् सम्राट्, जिसने नौवीं सदी में सम्पूर्ण काश्मीर पर दृढ़ता से शासन किया तथा अवन्तीपुर शहर बसाया, जहां उसके बौद्ध मन्दिरों के खण्डरात आज भी मौजूद हैं।**

- **(140) हरिसिंह नलवा - खत्री गोत्री जाट, जो महाराजा रणजीत सिंह के एक मुख्य सेनापति थे। कुछ इतिहासकारों ने इनको खत्री जाति का भी लिखा है।**

- **(141) Karni Ram Meel|करणीराम जाट]] - झूंझनूं (राजस्थान) में अपनी जाति के लिए शहीद होने वाले पहले वकील।**

- **(142) भूरा तथा निघाइया नम्बरदार - लजवाना (हरयाणा) गांव के दलाल गोत्री जाट, जिन्होंने राजा जीन्द से 6 महीने तक छापामार युद्ध किया।**

- **(143) कर्नल दिलसुख - मान गोत्री जाट, जो आई.एन.ए. में नेता जी के साथ रहे, वरना ये इतने सीनियर थे कि ये भारतीय थल सेना के अध्यक्ष बन सकते थे।**

- **(144) कप्तान कंवल सिंह दलाल - नेताजी सुभाष के साथ बर्लिन से टोकियो तक पनडुब्बी में साथ रहे।**

- **(145) जमादार हरद्वारी लाल - जिन्होंने संसार में सबसे पहले 10 हजार फुट की ऊंचाई पर अपना टैंक चढ़ाया।**

- **(146) सूबेदार बस्ती राम - पहले भारतीय जिनको सन् 1839 में इण्डियन आर्डर आफ मैरिट (आई.ओ.एम.) बहादुरी का पदक मिला।**

- **(147) सिपाही भवानी सिंह - गिलजाई की लड़ाई में पहला आई.ओ.एम. बहादुरी का पदक मिला। याद रहे 1856 के बाद विक्टोरिया क्रास (वी.सी.) मिलना प्रारम्भ हुआ।**

- **(148) कैप्टन भोला सिंह - हिन्दू डोगरा जाट, जो भारतीय सेना के प्रथम योद्धा जिन्हें ओ.बी.आई. (आर्डर आफ ब्रिटिश इण्डिया) का वीरता का पदक मिला जिनकी मूर्ति देवलाली आर्मी सैन्टर में लगी है। इन्हें जम्मू क्षेत्र के जाटों को जम्मू काश्मीर लाईट इन्फैन्टरी में स्थान दिलाने का श्रेय है।**

- **(149) मेजर होशियारसिंह (बाद में ले. कर्नल) दहिया गोत्री जाट जिसे भारतीय सेना में जीवित अवस्था में प्रथम 'परमवीर चक्र' मिला। अन्य जाट थे - ला. ना. कर्मसिंह तथा स्का. लि. निर्मलजीत सिंह शेखों (दोनों सिख जाट)। सन् 1856 से लेकर सन् 1947 तक कुल 1346 सैनिकों को 'विक्टोरिया क्रास' मिला, इनमें 40 भारतीय थे और इनमें से 10 'विक्टोरिया क्रास' जाटों के नाम हैं। नाम इस प्रकार हैं - 1-रिसलदार बदलूसिंह धनखड़ (पहले भारतीय जिनको यह पदक मिलाद), 2-सिपाही ईश्वर सिंह, 3-सूबेदेदार रिछपाल राम लाम्बा, 4-हवलदार प्रकाश सिंह, 5-हवलदार छैल्लूराम कोठारी, 6-नायक नन्दसिंह, 7-सिपाही कमलराम, 8-जमादार ज्ञानसिंह (इन्हें 1948 की लड़ाई में महावीर चक्र भी मिला था।) 9-कैप्टन परमजीत, 10-जमादार अब्दुल हमीज (यह प्रथम जाट बटालियन के थे. वैसे जाति से रांघड़ थे)।**

- **(150) शहीद पायलट शैफाली चौधरी - लोदाना गांव (उ.प्र.) - भारतीय वायुसेना में 'शौर्य चक्र' प्राप्त करने वाली प्रथम महिला।**

- **(151) डा. रामधनसिंह - जिसने सबसे पहले गेहूं की नई नस्ल का आविष्कार किया, लेकिन नोबल पुरस्कार डा. बोरलंग ले उड़े।**

- **(152) डॉ. पी.एस. गिल - पहले भारतीय जिन्होंने दूसरे विश्वयुद्ध के समय अमेरिका की 'एटम बम्ब मैनहैटन योजना' में कार्य किया।**

- **(153) कैप्टन भगवान सिंह - हिन्दू जाटों के पहले आई. सी. एस. अधिकारी थे। ये राजदूत भी रहे तथा कई वर्षों तक अखिल भारतीय जाट महासभा के अध्यक्ष भी थे।**

- **(154) मेजर जनरल सूभेगसिंह - भंगू गोत्री जाट, भाई महताबसिंह के वंशज- जिन्होंने सन् 1984 के विद्रोह में सन्त जनरेलसिंह भिन्डरवाला का साथ दिया।**

- **(155) ए.एस.चीमा - प्रथम भारतीय जो 'माउंट एवेरेस्ट' पर चढ़े।**

- **(156) कै० सुमन सांगवान - प्रथम वर्दीधारी उच्च-अधिकारी महिला जो 'माउंट ऐवरस्ट' पर चढ़ी ।**

- **(157) शेरसिंह ढिल्लों - ढिल्लों गोत्री जाट, जिन्होंने हिन्द महासागर को पैडल बोट से पार करने में विश्व रिकार्ड कायम किया।**

- **(158) कृष्ण कुमार चहल - चहल गोत्री जाट, जिसने मैमोरी (यादगार) में सन् 2006 में विश्व रिकार्ड बनाया।**

- **(159) नवीन गुलिया - गुलिया गोत्री जाट, जिसने शतप्रतिशत विकलांग होते हुए कार चलाने में विश्व रिकार्ड बनाया।**

- **(160) बिजेन्द्र सिंह बैनीवाल - पहले भारतीय जो विश्व बाक्सिंग रैंकिंग में प्रथम स्थान पर आये और खेल रत्न से नवाजे गए।**

- **(161) साइना नेहवाल - नेहवाल गोत्री जट पुत्री, जो बैडमिंटन में विश्व में अब दूसरे स्थान पर है इन्हें भी 'खेल रत्न' से नवाजा गया है।**

आज हम भारतवासी ओलम्पिक गोल्ड मैडल के लिए तरस रहे हैं जबकि जाटों के नाम पूरे 36 ओलिम्पिक गोल्ड मैडल हैं जिसमें उधमसिंह तथा बलवीर सीनियर के नाम तीन-तीन मैडल हैं। अभी हम कहेंगे कि ये तो हाकी खेल के गोल्ड मैडल हैं, तो क्या हाकी भारत का राष्ट्रीय खेल नहीं रहा है? आज भी दूसरे खेलों में जट पुत्रों का बड़ा नाम है। उदाहरण के लिए क्रिकेट में वीरेन्द्र सहवाग, आशीष नेहरा, युवराज, प्रवीण कुमार व प्रदीप सांगवान तथा इसी प्रकार कुश्ती में बिजिंग ओलम्पिक कुश्ती से सुशील कुमार सौलंकी तथा विश्व कुश्ती में रमेश कुमार गुलिया मैडल लेकर आए हैं। अभी-अभी कुछ दिन पहले वर्ल्ड बाक्सिंग में भी दिनेश सांगवान मैडल लेकर आया है। कहने का अर्थ है कि जाटों ने सैकड़ों अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी दिये हैं (सूची उपलब्ध है)। अभी 2010 के कामनवैल्थ खेलों के लिए ब्राण्ड अम्बेस्डर बनाए तो 6 में से 3 जाट हैं। लेकिन जिस प्रकार जाटों के साथ भारत रत्न आदि अवार्ड में भेदभाव चला आ रहा है उसी क्रम में दिनांक 26 जनवरी 2009 को इन महान् खिलाड़ियों को छोड़ दिया गया, जिन्होंने भारत का नाम दुनिया में रोशन किया। जबकि नाचकूद करने वालों को पद्मश्री व पद्म-विभूषण से अलंकृत किया गया। जैसे कि अक्षय कुमार, ऐश्वर्य राय बच्चन आदि-आदि। अभी-अभी दिनांक 10-2-2009 को भारत का सबसे बड़ा सिविल सम्मान 'भारत रत्न' एक वादक, पं. भीमसेन जोशी को प्रदान किया गया। जबकि आज तक इनके वादक और सुर को कितने भारतीय सुनते और जानते हैं, यह सोच का विषय है?

विशेष सूचना - पाकिस्तान में वीरता की सबसे बड़ी उपाधि 'निशान-ए-हैदर' है जो आज तक केवल पाकिस्तान के दस सैनिकों को मिली है जिनमें से आठ जाट हैं। लेकिन भारत में वीरता का सबसे बड़ा पुरस्कार 'परमवीर चक्र' आज तक केवल 20 वीर सैनिकों को मिला, जिनमें केवल मात्र तीन जाट हैं। (हमारे पास भारत व पाकिस्तान के सभी जाट वीरों के

नाम उपलब्ध हैं) (पुस्तकें - 'सिक्ख इतिहास, जाट इतिहास व भारतीय इतिहास की अनेक पुस्तकें) तथा (Jattworld website)

हारा नहीं जाट रण में, तीर तोप तलवारों से।
हारा है जाट गद्दारों से और दरबारों से ॥

नोट-

- **1. कई इतिहासकारों ने शहीद उधमसिंह को जाट जाति से लिखा है। वे कम्बोज जाति से थे।**
- **2. स्थानीय जाटों से प्रार्थना है कि जहां भी संभव हो सम्बन्धित जगह पर हमारे इन वीर पूर्वजों की यादगार/ मूर्तियां लगवाएं ।**